संजय की कलम से ..

मधुर बनो

मधु में एक ऐसा आकर्षण है कि लोग उसका स्वाद लेना चाहते हैं और उसके रस और शक्ति से आनन्दित होने के लिए उसकी ओर खिंचे चले जाते हैं, वैसे ही मधुरता में भी एक ऐसा आकर्षण है कि लोग मधुर वचनों को सुनने के लिए लालायित रहते हैं क्योंकि उससे उन्हें बहुत सुख मिलता है। इसलिए शिव बाबा कहते हैं, 'मधुर बनो, मीठे बनो अथवा क्षीर-खण्ड बनो क्योंकि मधुरता ही एकता और स्नेह लाती है जिससे सुख-शान्ति दोनों आ जाते हैं।'

यदि कोई डाक्टर रोगी को अच्छी औषधि दे परन्तु मधुर वचनों से न बोलकर कड़क कर तथा कड़वा बोले तो रोगी उसकी चिकित्सा छोड़ जाता है अथवा पूरा लाभ नहीं ले पाता। इसी प्रकार, एक समाज-सेवी, बहुत सेवा करते हुए भी यदि शीतल तथा मधुर व्यवहार नहीं करता तो लोग उससे दूर भागते हैं। किसी ज्ञानवान तथा रूहानी सेवक के लिए तो मधुरता और शीतलता के गुण अत्यन्त आवश्यक हैं वर्ना उस रूखे और कड़वे व्यक्ति से रूखा ज्ञान कौन सुनना चाहेगा?

इस संसार में मनुष्य दूसरों को जो दुख देता है, वह उसके पास लौटकर आता है जैसे कि गुम्बद में बोलने वाले व्यक्ति की अपनी आवाज़ लौटकर उसके पास आती है। अत: याद रहे कि दूसरों को सुख देने से, दान करने से, उनकी सेवा करने से तथा पुण्य करने से ही अपने मन में भी हर्ष होता है और हर्षित मनुष्य के मुख से शीतलकारी तथा मधुर वचन निकलते हैं।

हम सब कहते हैं, ''हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई, सब आपस में हैं भाई-भाई'' परन्तु इन सब भाइयों का एक बाप कौन है जिसकी एक मत पर हमें चलना तथा एक-मत होना है। यह न जानने के कारण आज आपस में एक-दूसरे से नफ़रत है और एक-दूसरे को खूनी आँखों से देखते हैं। एक बाप को जानने से ही आपस में भाई-भाई का सम्बन्ध जुटता है और एकमत निर्धारित होता है।

यह जानना भी जरूरी है कि यह भाई-भाई का प्यारा नाता 'आत्मिक' सम्बन्ध से है। इसके लिए याद रखें कि हम सभी एक ही ईश्वर पिता के बच्चे हैं, एक ही ईश्वरीय कुल के हैं और ईश्वर तो प्यार का सागर है अत: हम सभी को भी आपस में प्यार से, भाई-भाई की तरह बहुत स्नेहयुक्त व्यवहार करना है। भगवान शिव कहते हैं, मीठे बच्चो, अब मैं आप सबको सतयुगी प्रेम भरी दुनिया में ले जाने आया हूँ अत: बहुत-बहुत मधुर बनो। ❖

अमृत-सूची

◈ व्यवहारिक सौन्दर्य (सम्पादकीय) 4
◈ प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के .6
◈ सचित्र सेवा समाचार 8
◈ ईश्वरीय कारोबार में...........9
◈ 'पत्र' संपादक के नाम 11
◈ उनका व्यक्तित्व रूहानियत ..12
◈ मेरे जीवन साथी..............14
◈ अविनाशी पुत्र मिला 15
◈ दवाओं की दवा 16
◈ विशेष सूचना 17
◈ मुरली के बोल................18
◈ बेहद का संन्यास 19
◈ अनिद्रा से मुक्ति 20
◈ परमपिता परमात्मा का प्रेम ...22
◈ कमी को गुण में बदलो.......23
◈ विश्व एक परिवार 24
◈ दो खजाने....................26
◈ मुसकराओ-मौत को भगाओ.27
◈ सचित्र सेवा समाचार 28
◈ अभिवादन 30
◈ श्रद्धांजलि 31
◈ सचित्र सेवा समाचार 32
◈ आवश्यक सूचना 34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

सम्पादकीय ..

व्यवहारिक सौन्दर्य

मनुष्य का बाहरी व्यक्तित्व सुन्दर कपड़ों, सौन्दर्य प्रसाधनों तथा गहनों से चमक उठता है परन्तु आन्तरिक सौन्दर्य को निखारने के लिए प्रेम, दया, सद्भावना, सन्तोष, नम्रता, सत्यता जैसे गुण चाहिएँ। इस संसार में ऐसे परमभाग्यशाली लोग भी हैं जिनके पास आन्तरिक और बाहरी दोनों प्रकार के सौन्दर्य हैं, ऐसे भी हैं जिनके पास केवल एक ही प्रकार का सौन्दर्य है और ऐसे भी हैं जिनके पास दोनों ही प्रकार के सौन्दर्य नहीं हैं।

किसी की कुरूपता की नकल न करें

मान लीजिए, हम एक व्यक्ति से मिले, मिलने पर उसने अपेक्षित स्नेह, सद्भावना, मान और शिष्टाचार का प्रदर्शन नहीं किया, हमें ठेस लगी और सोच लिया कि ठीक है, आगे कभी यह भी हमसे मिलने आएगा तो हम भी इससे ऐसा ही रूखा और स्नेहरहित व्यवहार करेंगे। जैसा कि हमने ऊपर कहा, स्नेह, सद्भावना, मान, नम्रता, शिष्टाचार आदि हमारे आन्तरिक सौन्दर्य को निखारते हैं परन्तु इस व्यक्ति के पास यह सुन्दरता नहीं है तो क्या उसे देखकर, हम भी अपना सौन्दर्य धूमिल कर दें, उसके गुणहीन व्यवहार का अनुकरण करते हुए क्या अपने भी गुणों को छोड़ दें! यदि कोई व्यक्ति बिल्कुल साधारण, पुराने कपड़े पहने हुए हमसे मुलाकात करे तो क्या हम ऐसा निर्णय ले लेते हैं कि अगली बार हम भी बिल्कुल साधारण, पुराने कपड़े पहनकर इससे मिलेंगे। नहीं ना। उस समय तो हम यही सोचेंगे कि इस बिचारे के पास तो बढ़िया कपड़े हैं ही नहीं, यह है ही गरीब, मुझे इस जैसा थोड़े ही बनना है, मुझे भगवान ने जो अच्छा पहनने को दिया है, वही पहनूँगा।

जब हम बाहरी सौन्दर्य से रहित व्यक्ति का अनुकरण करके अपना बाहरी सौन्दर्य नहीं बिगाड़ना चाहते तो किसी की आन्तरिक कुरूपता की नकल क्यों करना चाहते हैं? आन्तरिक सौन्दर्य में उस जैसा गरीब क्यों बनना चाहते हैं? हमें यह सोचना है कि इसके पास प्यार, स्नेह, सद्भावना जैसे गुणों की गरीबी है इसलिए यह मुझे नहीं दे रहा है पर मैं तो इन गुणों में सम्पन्न हूँ, जब भी यह मुझ से मिला करेगा, मैं इसे इन गुणों की मिठास से भर दूँगा ताकि यह भी गुणों में अमीर हो जाए। याद रहे, किसी की बुराई को चित्त पर रखने से अपनी अच्छाई को ग्रहण लग जाता है। ग्रहण से बचाने के लिए अपनी अच्छाई को मज़बूती से पकड़े रहो ताकि उसकी बुराई को ग्रहण लगकर उसमें अच्छाई जागृत हो जाए।

अवगुण कम कर देते हैं मानव का मूल्य

वर्तमान युग में खेती-बाड़ी के लिए सुविधाजनक मशीनें आ गई हैं। अनाज निकालने का काम इन मशीनों से त्वरित गति से हो जाता है। मशीनों द्वारा एक तरफ अनाज छिलकों से अलग होता जाता है, दूसरी तरफ से उन्हें फटाफट बोरों में भर लिया जाता है। मशीनों के आने से पहले के समय में अनाज निकालने में मानवीय श्रम बहुत ज्यादा लगता था। इतने श्रम के बाद भी निकाले गए दानों में मिट्टी, कंकड़, तिनके आदि का मिश्रण हो ही जाता था। जिन दानों में कंकड़ हों उनका मूल्य भी कम हो जाता है। उनकी सफाई में मेहनत बहुत लगती है। इसके लिए एक स्थान पर स्थिर होकर बैठना पड़े, मन और आँखों की एकाग्रता से एक-एक दाने को देखना पड़े, उनमें मिले कंकड़ों को एक-एक करके बाहर फेंकना पड़े। तब जाकर वह अन्न भगवान और स्वयं को भोग लगाने योग्य बनता है। मानव जीवन में भी, यदि उसे सावधानीपूर्वक पालना ना मिले, उसकी परवरिश के हर पहलू – खान-पान, पढ़ाई, संग, मनोरंजन, खेल-कूद आदि पर समुचित ध्यान न दिया जाए तो अवगुण, बुराई, व्यसन आदि मिक्स हो जाते हैं और उसकी

कीमत को कम कर देते हैं।

उतरना पड़ता है भीतर

अनाज के साथ मिले कीड़ों, बालों, तिनकों, कंकड़ों की तरह मानव जीवन में मिक्स हो गई बुराइयों, कमज़ोरियों को भी पहले खोजना पड़ता है। भीतर उतरकर, संकल्पों की क्वालिटी को चेक करके, यह जानना होता है कि मेरे संकल्प किस उद्देश्य से उठ रहे हैं, ये संकल्प पदार्थों के आकर्षण के हैं? मनुष्यों के आकर्षण के हैं? या फिर कामचोरी, कर्त्तव्य उल्लंघन, पुरानी बीती हुई व्यर्थ बातों के या बदला लेने के हैं। इस प्रकार के चुनाव के बाद हम उन्हें अपने जीवन से उड़ा देने का दृढ़ संकल्प लेते हैं कि आज के बाद हम अपनी दृष्टि-वृत्ति को स्थिर रखेंगे, अमुक आकर्षण में नहीं फँसेंगे, अमुक प्रकार का नकारात्मक चिन्तन नहीं करेंगे आदि-आदि।

मानव बन जाता है उच्च से उच्चतम

इस कार्य में बहुत मेहनत लगती है क्योंकि ये संस्कार गोंद की तरह आत्मा से चिपके होते हैं। अनेक जन्मों से या इसी जन्म में लम्बे समय से कर्म में आ-आ कर काफी दृढ़ हो गए होते हैं इसलिए एक बार तो लगता है बीमारी पकड़ में आ गई और समाप्त हो गई पर थोड़ा-सा असावधान होते ही फिर उसके अंश से वंश उत्पन्न हो जाता है। अत: खाद्य में पड़े कंकड़ की तरह जीवन में पड़े कंकड़ों को निकालने में भी बहुत श्रम और समय देना है। ऐसा करने के बाद जीवन की कीमत बढ़ जाती है। अवगुण निकालने से गुणों को अन्दर प्रवेश करने की जगह मिल जाती है और मानव जीवन उच्च से उच्चतर और उच्चतम होता जाता है।

मन की कड़वाहट को धोलें

जब कभी गलती से कोई कड़वी चीज मुख में चली जाती है तो मुख कड़वा हो जाता है परन्तु हम तुरन्त कुल्ला करके उस कड़वाहट को धो देते हैं और इससे भी आगे, तुरन्त कोई मीठी चीज़ मुख में रखकर मुख को मिठास से भर लेते हैं और फिर हमें याद भी नहीं रहता कि हमने कड़वा खाया भी था। इसी प्रकार, ऐसा भी हो जाता है कि किसी ने कड़वा बोला, हमारा मन कड़वाहट से भर गया और वो कड़वाहट कई दिनों तक बनी भी रही, इससे मन का सुकून गायब हो गया। ऐसे में तुरन्त कोई सुखद और कल्याणकारी बात पढ़ लें या सुन लें ताकि मन की कड़वाहट धुल जाए। जैसे मुख को मीठा स्वाद चखाने के लिए तरह-तरह की चीज़ें (मीठे खाद्य पदार्थ) अपने पास रखते हैं उसी प्रकार मन को कड़वाहट से बचाने के लिए, मन को सुकून देने वाली, मिठास से भर देने वाली ईश्वरीय ज्ञान की बातें, ऊँचे विचार, ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तकें, ईश्वरीय ज्ञान के देखने और सुनने के साधन भी हमेशा अपने पास रखें। लम्बे समय तक जैसे मुख को कड़वा नहीं रखते इसी प्रकार मन की कड़वाहट को बनाए ना रखें, उसे भी समाप्त कर दें।

ज्ञान-दर्पण में देख व्यवहारिक सौन्दर्य ठीक कर लें

आज के समय में बाहरी साधनों और पदार्थों को सजाने, संवारने, चमकाने में समय, धन और शक्ति व्यर्थ गंवाये जा रहे हैं। व्यर्थ जाने वाली इन्हीं शक्तियों को यदि व्यवहारिक सौन्दर्य को बढ़ाने की दिशा में निवेश किया जाये तो मानव जीवन बहुत आनन्ददायी हो सकता है। एक छोटी कहानी का सार इस प्रकार है कि एक राजा ने बहुत-से लोगों को बर्तन बाँटे और कहा कि जो कोई अपने बर्तन को बहुत ज्यादा चमकाकर लायेगा, उसे इनाम दिया जायेगा। निश्चित दिन जब सभी एकत्रित हुए तो सभी के बर्तन एक-से-एक चमक रहे थे। जब राजा ने उनके अंदर झांका तो गंदगी मिली। केवल एक ही बर्तन था जो भीतर-बाहर समान रूप से चमक रहा था। राजा ने उसे इनाम का सच्चा पात्र माना। हमारे भीतर क्या भरा है, उसी से हमारा व्यवहार बनता है। जैसे प्रतिदिन स्थूल दर्पण में देखकर हम अपने बाल संवार लेते हैं, कपड़े व्यवस्थित कर लेते हैं इसी प्रकार प्रतिदिन ज्ञान-दर्पण में देखकर व्यवहारिक सौन्दर्य को भी ठीक कर लेना चाहिए। ❖

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

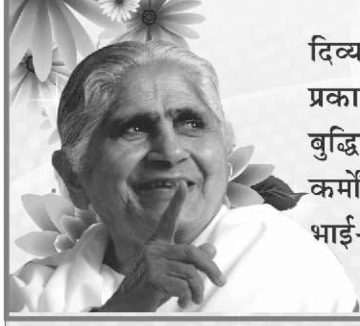

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्नः- आप अपने योगाभ्यास का अनुभव सुनाइये?

उत्तरः- मैं योग में अन्दर की सफाई करती हूँ क्योंकि दिल साफ होगी तब तो बाबा आयेगा ना। घर में सफाई नहीं करेंगे लेकिन मन्दिर में जाके सफाई करेंगे। लिखे-पढ़े बड़े लोग भी गुरुद्वारे में जा करके कुछ भी सेवा करके खुश हो जाते हैं। सफाई का काम करने को अपना भाग्य समझते हैं। तो पहले हमको याद में रहकर अपने दिल की, मन की सफाई करनी है। सफाई करते हैं तो खुशी होती है, बड़ा अच्छा लगता है। याद में रहने के लिए पहले स्थूल-सूक्ष्म सफाई चाहिए। सफाई के बाद मैं चेक करती हूँ, मेरा संकल्प कैसा है? जब नकारात्मक संकल्प होता है तो क्या हाल होता है? बदला लिये बिना रह नहीं सकेंगे। दूसरा संकल्प है व्यर्थ। अब हरेक यह चेक करे कि फालतू संकल्प में कितना समय जाता है? पुरानी और पराई बातों में कितने संकल्प चलते हैं? तीसरे हैं साधारण संकल्प। ये भी होंगे अभिमान के वश, करना थोड़ा, दिखावा ज्यादा... उसमें ही वो खुश हैं। पॉजिटिव में बहुत-बहुत फायदा है। इतना फायदा है, कैसी भी बात हो, उसे 'लेट गो' (जाने दो) कर सकते हैं। अब क्या करने का है? पॉजिटिव। श्रेष्ठ संकल्प से ज्ञान धारण हो जायेगा और बाबा से योग अच्छा लग जायेगा। बुद्धि में संगम का ज्ञान अच्छा होने से कल्पवृक्ष के नीचे बाबा-मम्मा के साथ बैठ तपस्या कर रहे हैं।

प्रश्नः- बेफिक्र बादशाह की निशानियाँ कौन-सी हैं?

उत्तरः- याद और सेवा दोनों श्रेष्ठ काम हैं। भगवान सच के अवतार हैं। जिसके कारोबार में सच्चाई है और संकल्पों में पवित्रता है वो साक्षात् बाप समान बन सकता है। जिसके संकल्पों में कोई दुख वा चिंता नहीं, सुख-शान्ति-प्रेम ही है वही आत्मा बेफिक्र बादशाह बन सकती है। तो ऐसा पुरुषार्थ करो जो 'मैं बाप समान अवतरित आत्मा हूँ', यह अनुभव कर सको। सेवा में भी सुख तभी मिलता है जब अन्दर में त्याग वृत्ति है, जीवन में तपस्या है फिर सेवा भले करो। सेवा करो और त्याग वृत्ति न हो, तपस्या न हो तो खुशी नहीं होगी, शक्ति नहीं मिलेगी। सन्तुष्ट रहने के लिए सहनशक्ति हो, सहनशक्ति के लिए धीरज हो। धीरज का फल मीठा होता है। कोई भी कारण से धैर्य छूटा, सहनशक्ति नहीं रही तो सन्तुष्ट कहाँ रहेंगे? इसलिए बाबा कहते, कुछ भी हो जाये, कैसी भी कोई बात हो.. फिर भी सन्तुष्ट रहना है, सन्तुष्ट करना है। सन्तुष्टता का वायब्रेशन फैलाना है। सन्तुष्टता की शक्ति का संग ऐसा दो जो कैसी भी असन्तुष्ट आत्मा के जीवन में परिवर्तन आ जाये। इतनी अन्दर में विल पावर हो जो कैसी भी आत्मा को बदलने की भावना हो।

प्रश्नः- नारायणी नशा कब महसूस होता है?

उत्तरः- योग की लगन की अग्नि ऐसी हो जो सभी की, सब कमजोरियाँ खत्म हो जायें। देह, सम्बन्ध, दुनिया सब पराये हैं, मेरे नहीं हैं। मेरा तो एक

शिवबाबा दूसरा न कोई। जब मेरा एक है, तो मैं कौन हूँ? पहले मुक्ति फिर जीवनमुक्ति इसलिए श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण को सामने रखते हैं। जैसे ब्रह्माबाबा को घड़ी-घड़ी स्मृति में था, मैं कृष्ण बनने वाला हूँ, उस घड़ी बाबा नारायणी नशे में दिखाई पड़ते थे, उनमें नारायण के सतयुगी संस्कार अनुभव होते थे। हमको भी बाबा अपने समान बनाना चाहते हैं। वे सिखाते हैं, जैसे मैं बन रहा हूँ, तुम भी बनो, यही राजयोग है। मन और कर्मेन्द्रियों के वश हैं, गुलाम हैं तो राजयोग नहीं है। योग लगाते हैं पर राजाई नशा नहीं है। अगर मन और कर्मेन्द्रियाँ बिल्कुल ऑर्डर में हैं तो नारायणी नशा चढ़ता है।

प्रश्नः- श्री लक्ष्मी-श्री नारायण समान बनने के लिए क्या धारणा है?

उत्तरः- श्रीराधे-श्रीकृष्ण मुरली की धुन से नाच रहे हैं, हँस रहे हैं पर श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण एकदम सभ्यता से खड़े हैं। श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण समान कैसे बनें? मन में कोई इच्छा नहीं, कोई ममता नहीं, मुझे कुछ चाहिए नहीं, बुद्धि फ्री है। बुद्धियोग कहा जाता है, मनयोग नहीं कहा जाता है क्योंकि मन से योग नहीं लगेगा, मन को शान्त रखना है। भटकना, लटकना, किसी का आधार लेना छोड़ दें तो मन शान्त रहेगा। जिसका मन शान्त नहीं है वो राजयोगी नहीं है। राजयोगी सिर्फ टाइटल नहीं है पर व्यवहार में ऐसा जीवन जीने वाला ही राजयोगी है। सच्चाई, प्रेम से अपनेपन की फीलिंग है और कोई बात फीलिंग में नहीं है। दिल बहुत खुश और मजबूत है, भले कोई गुस्सा करे। जो दिल को खुश रखने वाला है उसके सामने कोई भी आयेगा तो वह उसके भी दिल को खुश करेगा। बाबा चाहते हैं, आपस में मिल करके रहें तो बहुत अच्छा है। कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म ऐसा करें जो कर्मातीत बनें। श्रेष्ठ कर्म हो। घर जाने के लिए कर्मातीत स्थिति चाहिए। सतयुग में जाने के लिए श्रेष्ठ कर्म चाहिएँ। कर्म बड़े बलवान हैं। बाबा कहते हैं, टेढ़े रास्ते को सीधा कर दो, यह नहीं कहो कि रास्ता टेढ़ा है। गिरके चोट लग जाए या मोच आ जाए, ऐसे कर्म नहीं करने हैं क्योंकि हम वतन की ओर चल रहे हैं। ईश्वरीय स्नेह रूह में चला गया है। अपने को देखो, कभी ईश्वरीय स्नेह खाली तो नहीं होता है! स्नेह ही सम्पन्न बना रहा है।

प्रश्नः- सबके प्रति आपकी भावना क्या है?

उत्तरः- ईश्वर के अन्त (गहराई) में जाने से बुद्धि हदों से पार चली जाती है। किसी को कुछ करना नहीं आता हो तो सिर्फ बाबा को देख करके करते जाओ, तो सब समझ में आ जाता है। अनुभव न होने का कारण यह है कि ज्ञान की गहराई में नहीं जाते हैं। वर्तमान समय मेरी भावना यह है कि सभी अनुभव की मूर्ति बन जाओ। जैसे उस आइने में घड़ी-घड़ी मुँह देखते हैं ऐसे हम ज्ञान के आइने में घड़ी-घड़ी मुँह देखते हैं अपना फ्यूचर देखने के लिए। फ्यूचर का अगर ध्यान रहा तो फीचर्स में कभी कोई कन्फ्यूज़न नहीं होगा, सदा अच्छे फीचर्स होंगे। ऐसे नहीं, जिस घड़ी सेवा मिली उस घड़ी अच्छा होकर बैठ गया, फिर जब सेवा पूरी हुई तो जैसे का वैसा, ऐसे नहीं करना।

प्रश्नः- जैसे आप सदा ही एवररेडी हैं, बाबा को हाँ जी कहती हैं, ऐसे हम लोग भी किस तरह से सदा हाँ जी कहें और आपकी तरह एवररेडी बनें?

उत्तरः- मैं विधि बताती हूँ, सेकेण्ड में साइलेंस में जाओ, ना बीती बात, न आने वाली बात, कोई चिंतन नहीं, मन खाली है, बाबा की बात दिल को, मन को लग गई है। पहले दिल को लगी है। दिल साफ है तो जो बाबा के महावाक्य हैं, साकार या अव्यक्त वो हमारे लिये हैं, सबके लिए हैं पर पर्सनल कहूँ वो मेरे लिए हैं। बाबा के एक-एक महावाक्य की जो महानता है, मेरे से मिस न हो। ड्रामा अनुसार बाबा ने हरेक को अपना-अपना पार्ट दिया है। एक-दो के प्रति रिगार्ड रखना है, न किसी के प्रभाव में आना, न किसी के लिए थोड़ी भी घृणा रखना, तो सुरक्षा है। सत्य बाप की शक्ति से हम सदा एवररेडी रहें।

❖

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 7

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

परिवर्तन इस संसार का नियम है और इसी परिवर्तन के कारण सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग और फिर संगमयुग के रूप में सृष्टिचक्र घूमता रहता है। जीवन के व्यवहार में भी बाल, युवा, वानप्रस्थ फिर संन्यास इस प्रकार चलता है अथवा अगर स्त्री है तो वह पहले कन्या, पत्नी, माता फिर सास बनती है। प्रकृति में भी ऐसा ही होता है जैसे समुद्र का पानी सूर्य की किरणों से वाष्प बन बरसता है और फिर वही पानी नदी में जाता और नदी का पानी फिर समुद्र में मिलता है। इस प्रकार प्रकृति परिवर्तन का चक्र चलता है।

शिव बाबा ने भी विभिन्न प्रकार के परिवर्तन कराये हैं। ब्रह्मा बाबा पहले हैदराबाद में रहते थे फिर मुम्बई फिर कोलकाता गये और फिर वापिस हैदराबाद आये और ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना की। ईश्वरीय विश्व विद्यालय भी सिंध-हैदराबाद से कराची में आया, फिर 1950 में माउंट आबू में स्थानांतरित हुआ। इसके बाद हम सब जानते हैं कि धीरे-धीरे दिल्ली, मुम्बई, कर्नाटक आदि स्थानों में सेवाकेन्द्र खुलते गये और भारत में सेवाओं का विस्तार हुआ। फिर 1971 के बाद विदेश में ईश्वरीय सेवा का प्रारंभ हुआ।

स्थापना की शुरूआत में ब्रह्मा बाबा के रथ द्वारा शिवबाबा ने सभी बच्चों को ईश्वरीय ज्ञान तथा यज्ञ संचालन का कारोबार सिखाया। 18 जनवरी 1969 के बाद यज्ञ संचालन के लिए आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी तथा दीदी मनमोहिनी जी निमित्त बने तथा आदरणीया दादी गुलजार जी को शिवबाबा के रथ के रूप में निमित्त बनाया गया तथा 1974 से दादी जानकी जी को विदेश में ईश्वरीय सेवा तथा संचालन के लिए निमित्त बनाया इस प्रकार ईश्वरीय सेवा तथा यज्ञ संचालन के कारोबार का विभाजन हुआ और परिवर्तन आया।

दादी जानकी जी के कहने पर दादी प्रकाशमणि जी ने यज्ञ संचालन में मदद के लिए भ्राता निर्वैर जी, भ्राता बृजमोहन जी तथा मुझे मैनेजमेन्ट कमेटी में शामिल किया। इस प्रकार यज्ञ संचालन में सेवाओं के लिए हम तीनों भाई निमित्त बने। आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी के अव्यक्त होने के बाद दादी जानकी जी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका बने। उनको शिवबाबा ने डबल सेवा की जिम्मेदारी दी। देश व विदेश की सेवा एवं व्यवस्था संचालन में दादी जानकी जी सेतु बनकर सेवायें कर रही हैं।

दादीजी के अव्यक्त होने के बाद दादी जानकी जी ने धीरे-धीरे ईश्वरीय सेवा का विभाजन किया। दादियों एवं बहनों ने ज्ञान के प्रसार तथा प्रशासन का कार्य सम्भाल लिया और हम तीन भाइयों को यज्ञ संचालन का कार्य सौंप दिया। इसके लिए पहले भी अव्यक्त बापदादा ने हमें इशारा दिया परंतु दिनांक 15-3-2014 को हम तीनों भाइयों को हमारी सेवा की ज़िम्मेवारी याद दिलाते हुए हमें संस्कार मिलन का ऐसा कार्य करने के लिए कहा कि हम तीन नहीं परंतु संस्कारों में एक हैं। साथ-साथ यज्ञ सेवाओं में साथियों को साथ देने के लिए भी इशारा दिया।

यहाँ पर मैं एक बात बताना चाहता हूँ कि 1973 तक यज्ञ कारोबार में लिखत में हिसाब-किताब की जरूरत नहीं थी क्योंकि कानून में संस्थाओं के लिए हिसाब-किताब रखने के लिए कोई प्रावधान नहीं था। परंतु 1973 से भारत सरकार ने सभी संस्थाओं के लिए कानून बनाया कि सबको हिसाब-किताब रखना चाहिए और तब से यज्ञ में हिसाब-किताब रखने का कार्य शुरू हुआ। पहले मैं और दादा विश्वरतन विशाल भवन के कमरा नं. 18 में बैठकर सब हिसाब-किताब लिखते थे। समय परिवर्तन

होता गया। हमने पहले बहनों को हिसाब-किताब लिखना सिखाया और बहनें उसमें इतनी प्रवीण हो गईं कि एक बी.कॉम. पढ़ा हुआ व्यक्ति एकाउन्ट का जितना कार्य कर सकता है उतना ही हमारी बहनें भी कर सकती थीं। फिर यज्ञ में कम्प्यूटर द्वारा एकाउन्ट का कार्य होने लगा। जिन बहनों ने उमंग-उत्साह दिखाकर कम्प्यूटर सीखा उन्हें यह हिसाब-किताब करना बहुत सहज हो गया। मैं हमेशा कहता हूँ कि बीसवीं सदी में जिन्हें अक्षर-ज्ञान नहीं है वे अनपढ़ कहलाते थे परंतु इक्कीसवी सदी में जिन्हें कम्प्यूटर नहीं आता वे अनपढ़ हैं। बाद में कंप्यूटर द्वारा हिसाब-किताब लिखने की प्रक्रिया में और भी नई तकनीक का इस्तेमाल किया गया और अभी कनेक्ट-वन (Connect-one) एक प्रोग्राम है उसमें ही सारा हिसाब-किताब कम्प्यूटर से लिखा जाता है। पहले बहनें हिसाब-किताब के लिए हर महीने एक फॉर्म भरती थीं फिर उसे मधुबन भेजती थीं परंतु कनेक्ट-वन से यह कार्य इतना सहज हो गया है कि बहनें जब अपने स्थान के कम्प्यूटर में हिसाब टाइप करती हैं तो वह हिसाब मधुबन एकाउन्ट ऑफिस में उसी समय टाइप हो जाता है। आज हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि ब्रह्माकुमारीज़ का एकाउन्ट का कारोबार भी विश्वस्तरीय हो गया है।

जैसा कि हमारे ज्ञान में बताया है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार के साथ-साथ आलस्य भी एक छठा विकार है, ऐसे ही बाबा के ज्ञान के जो चार आधारस्तंभ हैं – ज्ञान, योग, धारणा व सेवा, वैसे ही व्यवस्थापन (Management) भी एक पाँचवाँ विषय है।

अभी अंतिम समय की तैयारियाँ शुरू हैं, अंतिम सेवा का कार्य कैसे होगा इसके बारे में अव्यक्त बापदादा हमें इशारे देते रहते हैं। अंतिम समय के लिए हमें श्रेष्ठ पुरुषार्थ के साथ-साथ और भी तैयारी करनी पड़ेगी जैसे कि बाढ़, अकाल, राजनैतिक क्षेत्र में परिवर्तन, प्राकृतिक आपदायें तथा भारत में विशेष रूप से गृहयुद्ध होगा, तो ऐसे समय पर कैसे हम यज्ञ का कार्य चलायें इसके लिए व्यवस्थापन (Management) सीखना जरूरी है।

व्यापार में वृद्धि करने तथा उसमें कुशलता के लिए हॉर्वर्ड, ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज आदि विश्वविद्यालयों में मैनेजमेन्ट के अनेक कोर्सेज सिखाते हैं जिसे भारत में एम.बी.ए. (Master of Business Administration) कहते हैं। दुनिया में कई कम्पनीज़ ने यह तय किया है कि कंपनी के मैनेजर के पास एम.बी.ए. की डिग्री होना आवश्यक है। जैसे लौकिक दुनिया में मैनेजमेन्ट सीखना जरूरी है वैसे ही बाबा के यज्ञ के कारोबार में भी मैनेजमेन्ट सीखना जरूरी है और ऐसे कारोबार करने वालों को हमारे यहाँ एम.डी.ए. (Master of Divine Administration) कह सकते हैं। जो इस प्रकार से यज्ञ कारोबार में प्रवीण (Expert) बनेंगे वही भविष्य में सुचारु राज्य प्रशासन का कारोबार कर सकेंगे। जैसे अव्यक्त बापदादा ने 15-3-2014 की मुरली में कहा कि दिल्ली भविष्य में भी विश्व राज्य का प्रमुख स्थान होगा और वहां पर श्री लक्ष्मी श्री नारायण राज्य करेंगे। फिर प्यारे बाबा ने कहा कि 'जितने नजदीक अवस्था अनुसार अभी होंगे उतना ही वहां परिवार के नजदीक होंगे।' इस प्रकार बापदादा ने अवस्था और व्यवस्था के बीच जो श्रेष्ठ संबंध है इसे स्पष्ट किया। हमें अभी अपने पुरुषार्थ से अपनी अवस्था बनाने के साथ-साथ व्यवस्थापन की कला भी सीखनी पड़ेगी।

प्यारे बापदादा ने 'जैसी अवस्था वैसी व्यवस्था' यह सतयुगी दुनिया के लिए कहा है। **'अवस्था'** आत्मा की स्थिति के लिए कहा है और उसी अवस्था अनुसार वहाँ की व्यवस्था होगी अर्थात् वहाँ पर आत्मा की अवस्था सम्पूर्ण पवित्र होगी इसलिए वहां प्रकृति, मनुष्य, विश्व सब कुछ 100 प्रतिशत सम्पूर्ण (Perfect) होंगे। बाबा ने हमें आदर्श व्यवस्थापन और आदर्श व्यवहार करना सिखाया

है और इसके लिए वे हमें दैवी परिवार में निमित्त बनना सिखाते हैं। हमें व्यवस्थापन शक्ति को सीखना चाहिए उसे हम नजरअंदाज नहीं कर सकते।

हमने प्यारे ब्रह्मा बाबा, मातेश्वरी जी, दादी प्रकाशमणि जी, दीदी मनमोहिनी जी आदि एडवांस पार्टी की पूज्य आत्माओं के व्यवस्थापन कौशल को देखा है। इन सभी के निपुण कार्य व्यवहार से ही मात्र 77 वर्ष के समय में ईश्वरीय विश्व विद्यालय का इतना विस्तार हुआ है। इसका कारण यही है कि परमपिता परमात्मा करनकरावनहार हैं। वे सदा ही हमें मार्गदर्शन करते हैं और हमें मदद करने के लिए तैयार हैं। आवश्यकता सिर्फ इस बात की है कि हम परमात्मा के श्रेष्ठ कार्य में निमित्त बनें। परमात्मा की श्रीमत अनुसार और कुशल व्यवस्थापन के आधार पर अगर हम संगमयुग का कारोबार करेंगे तो भविष्य में भी श्रेष्ठ पद प्राप्त कर सकेंगे।

इस लेख का मुख्य लक्ष्य यही है कि शिवबाबा अभी हम बच्चों में अवस्था के साथ-साथ व्यवस्था शक्ति का भी निर्माण कर रहे हैं। अवस्था पुरुषार्थ के अनुसार और व्यवस्था अनुभव के आधार पर सिखा रहे हैं। ईश्वरीय सेवा में अवस्था और व्यवस्था से विश्व परिवर्तन का कार्य करना पड़ेगा और जो निमित्त बनेंगे उनके ही हाथों में विश्व राज्य का कारोबार हो सकता है।

आगे के लेखों में मैं बताऊँगा कि विश्व कारोबार अर्थात् Master of Divine Administration बनने के लिए आवश्यक योग्यतायें क्या हैं जिनको धारण करके हम विश्व कारोबार में पारंगत बन सकते हैं अर्थात् जैसे हमारी बहनें हिसाब-किताब के क्षेत्र में बी.कॉम की डिग्री तक का अभ्यास कर चुकी हैं और एकाउंट्स लिखने के लिए कंप्यूटर के ज्ञान को भी आत्मसात कर लिया है, इसी तरह से मेरी एक शुभभावना है कि हम सब M.D.A. (Master of Divine Administration) बन जायें अर्थात् सतयुगी विश्व की व्यवस्था के कारोबार में विशेषज्ञ बन जायें। उम्मीद है कि मेरी यह भावना आप सबको स्वीकार होगी।

❖

'पत्र' संपादक के नाम

फरवरी, 2014 का अंक पढ़ा। त्रिमूर्ति शिवजयन्ती के आध्यात्मिक रहस्य के बारे में जानने व समझने का अवसर मिला। आपकी पत्रिका के लेख सारगर्भित व दिल को छू लेने वाले होते हैं।

– तरुण कुमार अग्रवाल, दुर्ग

फरवरी, 2014 अंक में सम्पादकीय लेख 'राजयोग से स्वभाव परिवर्तन' में यह अच्छा लगा कि चीज़ों का नहीं, मनुष्यों का सुधार होना चाहिए। मानव अगर मानव हो जाए तो संसार सुखमय हो जायेगा। प्रेम ऐसा हो कि तू भी मानव, मैं भी मानव। विज्ञान ने बड़े-बड़े आविष्कार कर डाले, उनका प्रयोग मानव व प्रकृति के उत्थान के लिए होना चाहिए, न कि विनाश के लिए। मनुष्य स्वयं को सुधार ले तो यह मानव जाति के लिए अमृत-तुल्य है।

– चन्डी प्रसाद उनियाल, दिलशाद कालोनी, दिल्ली

जनवरी विशेषांक प्रजापिता ब्रह्मा को समर्पित है, बहुत सुंदर है, बाबा के त्याग, करुणा, दया, ममता के बारे में बताता है। वंश परम्परा को छोड़ बाबा ने ज्ञान का कलश नारी को सौंपकर काबिल हस्तियों को यह मिशन सौंपा, ऐसा अन्यत्र देखने को नहीं मिलता। बाबा के बताए मार्ग पर चलकर हम सुंदर जीवन और सुंदर दुनिया बना सकते हैं, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

– लक्ष्मीकांत महादुले, नागपुर

उनका व्यक्तित्व रूहानियत से सराबोर था

● ब्रह्माकुमारी कमलेश, मुम्बई (सांताक्रुज ईस्ट)

आदरणीय भ्राता जगदीश चन्द्र जी का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावशाली, रूहानियत से सराबोर, तेजस्वी व महान था। उनके सानिध्य में बिताये गये समय को जब-जब याद करती हूँ, तब-तब उनके प्रति सम्मान, श्रद्धा व रूहानी स्नेह के ऐसे भाव उभरते हैं जिनको शब्दों में अभिव्यक्त करना सम्भव नहीं। फिर भी उभरी हुई स्मृतियों को शब्दों की माला में पिरोने का प्रयास कर रही हूँ।

'ज्ञानामृत' की सेवा से समीप आने का सुअवसर

भ्राता जगदीश जी को सम्मानपूर्वक 'भाई-साहब' कहकर बुलाया करती थी। उनसे मेरी प्रथम मुलाक़ात सन् 1968 में दिल्ली, कमला नगर सेवाकेन्द्र पर हुई जहाँ मैंने बारह वर्ष की आयु में प्रात: क्लास में जाना प्रारम्भ किया था। उस समय मासिक पत्रिका 'ज्ञानामृत' वहीं छपवाई जाती थी और वहीं से भेजी जाती थी। एक दिन मैं लगभग 11-12 बजे के बीच किसी कार्य से सेवाकेन्द्र पर गयी। वहाँ सत्यनारायण भाई (भाई साहब के मददगार) ज्ञानामृत को भेजने की सेवा कर रहे थे। मैंने पूछा, मैं भी सेवा में मददगार बन जाऊँ? उन्होंने मेरी लिखाई देख मुझे अनुमति दी। इस सेवा में सहयोगी बनने से ही भाई साहब के थोड़ा समीप आने का सुअवसर मिला। लौकिक बड़ी बहन सुधा (मास्को, रशिया में सेवारत) उनके द्वारा दिया गया प्रूफ रीडिंग का कार्य घर पर ले आती थी, यदा-कदा मैं भी उसको मदद करती थी, यह भी निमित्त कारण बना उनके समीप आने का।

आकर्षित करता था ज्ञान सुनाने का ढंग

ईश्वरीय ज्ञान में आते ही हमने सेवाकेन्द्र के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेना प्रारम्भ किया। कमला नगर सेवाकेन्द्र पर लगभग 30-35 कुमारियों का ग्रुप बन गया था। जब हम सांस्कृतिक कार्यक्रम की तैयारी करते थे तो भाई साहब बीच-बीच में आ जाते, हमारी तैयारी को देखते, कभी-कभी कार्यक्रम का मूल भाव भी हमसे सुनते, फिर ऐसी ज्ञानयुक्त बातें कह देते जो हमारी प्रस्तुति में सहायक होती। भ्राता जी का ज्ञान सुनाने का ढंग आकर्षित करता था। हमारी आयु के अनुसार वे ज्ञान को ऐसे स्पष्ट करते जिससे वह बुद्धि में बैठ जाता था। यदि उनके साथ सामान्य रीति से भी बातचीत होती तो उसमें भी ज्ञान के अनेक रहस्य छिपे हुए रहते। जैसा व्यक्ति, जैसा उसका

व्यवसाय, जैसी उसकी शिक्षा उसी तरीके से वे बातचीत करते।

सम्मानपूर्ण दृष्टि और व्यवहार

मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा। छोटा हो या बड़ा, साधारण माता हो या पढ़ा-लिखा विद्वान, भाई हो या बहन, वे हरेक को सम्मान की दृष्टि से देखते और सम्मानपूर्वक व्यवहार करते। वे यज्ञ के मुख्य वक्ता, अति वरिष्ठ भ्राता थे लेकिन फिर भी वे आयु, ज्ञान और अनुभव में छोटी बहनों को भी बहुत सम्मान देते। हमेशा नाम के साथ 'बहन' शब्द लगाकर सम्बोधित करते।

सम्मान करना सिखाया

उन्होंने हमें सिखाया कि जब बड़ों से या दादियों से मिलने जाते हो तो हमेशा कुछ न कुछ ले जाना चाहिए। यह भी बड़ों के प्रति हमारा आदर-भाव है। दिल्ली, पांडव भवन के निर्माण होने

पर हमारी प्यारी दादी गुलज़ार जी वहाँ चली गयी (पहले दादी कमला नगर सेवाकेन्द्र पर रहा करती थी)। जब लौकिक माता जी के साथ हम पहली बार दादी जी से मिलने पांडव भवन जा रहे थे तब भ्राता जी ने लौकिक माता जी को बुलाकर कहा, आप पांडव भवन, गुलज़ार दादी को मिलने जा रही हो, कुछ ले जाओगी ना.... हमारी बड़ी दादी है ना। कहने का भावार्थ यह है कि खुद भी दूसरों का सम्मान करना और दूसरों में भी यह संस्कार भरना, यह उनकी विशेषता थी।

लव और लॉ का बैलेन्स

लव और लॉ का बैलेन्स, इसका साकार स्वरूप हमने उनके जीवन में देखा। यदि वे किसी भाई या बहन को ईश्वरीय नियम और मर्यादाओं के विपरीत कोई कार्य करते हुए देखते तो उसको नियम व मर्यादा भी बतलाते और साथ ही साथ इतना स्नेह देते कि उसे वह बात बुरी भी न लगे। यदि किसी को उनके द्वारा कही गई बात कभी अच्छी नहीं लगती थी या फीलिंग में आ जाता तो भाई साहब उसके पास जाकर उससे दिल की लेन-देन करते ताकि उसकी अवस्था ठीक रहे।

सेवा करने वालों का विशेष ध्यान

बाबा की सेवाओं में जो सहयोगी बनते, उनका वे बहुत ध्यान रखते। बात उन दिनों की है जब दिल्ली, शक्ति नगर सेन्टर पर म्यूज़ियम बन रहा था (कमला नगर सेवाकेन्द्र 1978 में शक्ति नगर स्थानान्तरित हुआ)। म्यूज़ियम में स्वर्ग का मॉडल बनाना था।

उसकी सजावट की सेवा चक्रधारी दीदी ने मुझे और मेरे साथ कुछ अन्य को दी हुई थी। अगली सुबह म्यूज़ियम का उद्घाटन था। सेवा करते-करते रात हो गई थी पर सेवा पूरी नहीं हुई थी। लगभग रात के दस बजे भ्राता जी हमारे पास आये, सेवा देखी, फिर कहा, 'काफी समय हो चुका है आप सभी जाकर विश्राम करो।' मैंने कहा, 'भाई साहब, कल उद्घाटन है, काफी सारा कार्य बाकी है, थोड़ा समय और सेवा कर लेते हैं।' अन्दर से तो मेरे मन में यह था कि भाई साहब भी सो जायेंगे, दीदी भी सो जायेंगी, हम अपनी सेवा पूरी करके ही विश्राम करेंगे। लगभग साढ़े ग्यारह बजे भाई साहब ने फिर आवाज लगाई और सोने के लिए कहा। मैंने फिर कहा, 'बस, अभी जाते हैं।' आधे घन्टे बाद भाई साहब फिर वापस आये और हम सबको बाहर बुलाया। जब तक हम सभी सोने के लिए नहीं गये, वे बाहर खड़े रहे। हम सबको सुलाकर ही वे निश्चिन्त होकर विश्राम कर पाए।

राखी क्यों नहीं भेजी?

मुम्बई में रहते हुए मुझे काफी वर्ष हो गये थे। एक बार मैंने उनको राखी नहीं भेजी (बचपन से हम बहनें उनको राखी बांधा करती थी)। उसके बाद जब मैं मधुबन आयी, तो वे पांडव भवन के आंगन में मिले और कहा, ''क्यों इस बार राखी नहीं भेजी? क्या इतनी बड़ी हो गई हो जो भूल गयी!'' उनके पास तो ढेरों राखियाँ आती होंगी। सुनने-पढ़ने में यह बात मामूली-सी लगती है लेकिन कितनी बड़ी बात है! उनका यह स्नेह केवल मेरे लिए नहीं, जो भी उनके सम्पर्क में आते सबके लिए इसी प्रकार का रहता था।

संक्षिप्त में यही कहूँगी कि जैसे बाबा कहते हैं कि बच्चे तुम्हें बाप-समान बनना है, मैंने बहुत बार उनके व्यक्तित्व में इस समानता का अनुभव किया। अपने अद्वितीय, अलौकिक, अद्भुत व्यक्तित्व से अनेकानेक आत्माओं को बापसमान बनने की प्रेरणा देने वाले भाई साहब को मेरा शत्-शत् प्रणाम। ❖

मेरे जीवन साथी शिव भोलेनाथ

● ब्रह्माकुमारी सुनीता, देवपुर, धुलिया

एक गीत की एक सुन्दर पंक्ति इस प्रकार है, 'कदम-कदम पर मदद तुम्हारी यह अहसास दिलाती है, सोचो तुमको कौन मिला है, कौन तुम्हारा साथी है।'

मैंने तो सोच लिया, समझ लिया, पहचान लिया और उसे अपना भी बना लिया कि वही ईश्वर, प्रभु, खुदा, अल्लाह, भगवान, परमेश्वर, हर आत्मा रूपी सजनी की पत (मान) रखने वाला सच्चा पति निराकार शिव भोलानाथ ही मुझ निराकार आत्मा का सच्चा-सच्चा साथी है। जबसे मैं उनकी बनी हर पल बेहद खुशी, नि:स्वार्थ प्यार, अतीन्द्रिय सुख मिला, आज तक मिल रहा है और अंत तक भी मिलता रहेगा।

हमेशा चिंतित रहती थी

पति की शराब की आदत मेरे दु:ख का कारण बनी। मैं हमेशा चिंतित रहती थी। चार लौकिक बच्चियों की पढ़ाई और भविष्य की चिंता करती थी। पीहर घर में भैय्या तथा मम्मी ज्ञान में चलते हैं। मुझे हमेशा कहते थे, राजयोग सीखो, समय बहुत कम है, ज्ञान से जन्म-जन्मांतर के लिए सुख-शांति की प्राप्ति होगी। मैं सुनते हुए भी नहीं सुनती थी। यह कहकर टाल देती थी कि जब जरूरत होगी तब सीखूंगी। दिन प्रतिदिन पति की शराब की आदत बढ़ती गई और मेरा तनाव भी बढ़ता गया। शराब छुड़ाने के लिए मैंने भक्ति बहुत की। 'स्वामी समर्थ' के प्रति मेरी विशेष श्रद्धा थी। वहाँ परमात्मा शिव की ही सेवा, जप-तप, उपवास करती थी लेकिन कोई प्राप्ति नहीं हुई। फिर परेशान होकर भगवान से ही कहा, ऐसी दु:खभरी जीवन मुझे नहीं चाहिए, आपका दिया जीवन, आप ही ले लें।

सुख-शान्ति, प्रेम, खुशी की अनुभूति हुई

मेरी यह आवाज सचमुच उन तक पहुँची। शिवजी के व्रत का ही दिन था। निराकार शिव भगवान अदृश्य रूप में मानो मेरा हाथ पकड़कर सेवाकेन्द्र लेके गये। इससे पहले कभी सेवाकेन्द्र देखा नहीं था। द्वार पर कदम रखते ही अपने घर में पहुँचने का अहसास हुआ। जब बिंदु स्वरूप बाबा के चित्र के सामने गई तो मैं आत्मा उनके दिल में समा गई। मेरी आँखों से गंगा-जमुना बहने लगी। जन्म-जन्मांतर से उनसे मिलने की आस पूरी हो गई। प्यारे बाबा से स्नेह की किरणें मुझ पर बरस रही थीं। सुख-शांति, प्रेम, खुशी की अनुभूति हुई। मेरे दु:ख, दर्द, अशांति, विकार जैसे उन आँसुओं में बह गये। मैं स्वयं को बिलकुल हलका महसूस करने लगी। अगले दिन से राजयोग का कोर्स किया तो ज्ञान-रस का आनंद मिलने लगा। सत्य परमपिता की सर्व संबंधों के रूप में यथार्थ पहचान मिली। सृष्टि चक्र, कर्मगति का गुह्य ज्ञान मिला। बुद्धि के सारे पट खुलने लगे। दु:खमय काँटों भरा जीवन सुख-शांति, प्यार-खुशी आदि प्राप्तियों से हरा-भरा हो गया। इस आत्मा ने प्यारे बाबा से वायदा किया कि जब तक जीऊँगी तब तक ज्ञान का अमृत पीऊँगी और सारे संबंध एक आप से ही अनुभव करूंगी। उसने भी मुझे फरमान दिया, तू मेरी पवित्र सीता (आत्मा) बन जाओ तो मैं निराकार राम हर पल तुम्हारे साथ रहूंगा और आज तक रामजी ने भी अपना वायदा निभाया है और निभाते रहेंगे, ऐसा दृढ़ निश्चय है।

सर्व सम्बन्धों का सुख मिला

मैंने सभी सांसारिक और अलौकिक जिम्मेवारियाँ उन्हें सौंप दीं जो उन्होंने बड़े सुंदर तरीके से पूरी करके दिखायी। शिव साजन का साथ मिलने के बाद मैंने कभी भी आँखों में दु:ख, परेशानी, चिंता के आँसू नहीं लाये। हमेशा उमंग-उत्साह, खुशी, अतीन्द्रिय सुखों के, सर्व प्राप्तियों के झूले में झूलती रही। जन्म-जन्म के लिए ये प्राप्तियाँ साथ ले जाऊंगी। दिन में हर पल उन्हें अलग-अलग संबंधों से साथ रखती हूँ। मन में अनहद गीत बजता रहता है, 'एक तेरा साथ हमको

दो जहाँ से प्यारा है, तू है तो हर सहारा है, ना मिले संसार तेरा प्यार तो हमारा है'। मेरे साथी ने तो सारा संसार ही मेरे नाम कर दिया। विश्व की महारानी जैसा सुख यहाँ ही मुझे मिला है। वो सब कुछ मिला जो एक सजनी अपने साजन से चाहती है, एक बच्ची अपने बाप से चाहती है, एक माँ अपने बच्चे से चाहती है, एक बहन अपने भाई से चाहती है, एक दोस्त अपने दोस्त से चाहता है और एक स्टूडेन्ट अपने शिक्षक से चाहता है। ऐसे सर्व संबंधों का भरपूर प्यार अभी भी मिल रहा है और जन्म जन्मांतर भी मिलता रहेगा। अगले कल्प में मैं पुन: शिव साजन से मिलन का इंतजार करूंगी। पुन: संगमयुग आयेगा और यह मिलन का सिलसिला चलता रहेगा। ❖

अविनाशी पुत्र मिला

कला बहन पटेल, चन्दा नगर, हैदराबाद

माँ का अपने बच्चे में कितना मोह होता है, कोई मुझसे पूछे। पहली पुत्री के जन्म के बाद पुत्र की चाहना में मैं कितने गुरुओं के चरणों में गिरी, कितने देवी-देवताओं से मन्नत मांगी तब जाकर पांच साल के बाद बेटा हुआ। उस बेटे में मेरा जबरदस्त मोह था। उस बेटे की हर इच्छा पूर्ण करने में ही मेरा पूरा ध्यान रहता था। पांच साल के पुत्र का दो दिन की बीमारी में अचानक शरीर छूट गया। मुझे सहारा देने वाले मेरे पति के दुख की कोई सीमा न थी, तो मेरा क्या हाल रहा होगा? हमारा दुखी, अशान्त, अन्धकारमय जीवन बन गया जैसे कि सब कुछ लुट गया।

हर आश पूरी करता है अविनाशी पुत्र

कहते हैं, सूर्य हमेशा अन्धकार में ही उदय होता है, ऐसे ही भाग्योदय भी अन्धकारमय जीवन के बाद ही होता है। हमारे दुखों से भरे निराश जीवन को देख एक परिचित व्यक्ति, एक महीने के बाद हमें ब्रह्माकुमारी आश्रम ले गये। ब्रह्माकुमारी बहनों ने ईश्वरीय ज्ञान सुनाया। इसके बाद उन्होंने परमात्मा के साथ सर्व सम्बन्धों की बातें सुनाई। वो मुझे बहुत अच्छी लगी, पता चला कि परमात्मा हमारी माता भी हैं, पिता भी हैं, साजन भी हैं, दोस्त भी हैं, बन्धु भी हैं और परमात्मा पुत्र भी हैं। परमात्मा से जब पुत्र का सम्बन्ध जुड़ा तो मुझे मेरे अविनाशी पुत्र मिल गये। मेरे पुत्र शिवबाबा और मैं उनकी शिव माता बन गई। तब से मैंने अपनी रसोई में अविनाशी पुत्र शिव का फोटो रखा है। लौकिक पुत्र को जो चाहिये, जैसा चाहिये वह बना कर खिलाती थी, उसका पूरा ध्यान रखती थी लेकिन अविनाशी पुत्र शिवबाबा ऐसे मिले हैं जो मेरा पूरा ध्यान रखते हैं, मेरी हर आशा पूरी करते हैं, हर पल मुझसे बातें करते हैं।

सबका जीवन बने धन्य-धन्य!

मेरे अविनाशी पुत्र ने मेरी सभी चिन्तायें, दुखदर्द लेकर मेरा जीवन अविनाशी खुशियों से भर दिया है। मुझे सच्चा सहारा देने वाले मेरे शिव पुत्र, वाह! आपकी क्या महिमा करूँ, जो आपने मुझे पद्मापद्म भाग्यशाली बना दिया। शिव बेटे, आपने तो मेरे अनेकानेक जन्मों तक के जीवन को उजियारे से भर दिया। बस शिव बेटा, अब तो एक ही शुभ आशा है कि जैसे मेरे दुखी, अशान्त, लाचार जीवन को धन्य-धन्य बना दिया, ऐसे ही उन अनेक माँओं का जीवन भी धन्य-धन्य बने जिनके या तो पुत्र नहीं है, अगर था तो गँवा दिया या जिनके पुत्र हैं फिर भी वे लाचार और दुखी हैं। उनके आप अविनाशी पुत्र बन, उनको भी मेरे समान धन्य-धन्य बना दें। उन्हों के जीवन में उजियारा भर दें। मेरा उन दुखी, अशान्त, लाचार माँओं से अनुरोध है कि भगवान को अपना बेटा बनाने के लिए नज़दीकी ब्रह्माकुमारी आश्रम में जाकर भगवान से सर्व सम्बन्ध जोड़ने की सहज विधि सीखें और अनेक जन्मों के लिए जीवन को उजियारे से भर लें। ❖

दवाओं की दवा – आध्यात्मिकता

● ब्रह्माकुमारी रुखमा, बुरहानपुर (म.प्र.)

जीवन एक सुनहरी और सुखमय यात्रा है। इस यात्रा में चलते समय दिक्कत तब आती है जब लोगों में भगवान के प्रति आस्था, विश्वास, प्रेम की कमी दिखाई देती है। भारत जैसे आध्यात्मिक देश में आत्म-ज्ञान के प्रति लोगों की अनेक भ्रांतियाँ देख उनकी बुद्धि पर तरस पड़ता है।

एक सुन्दर गीत है, ''देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान, कितना बदल गया इन्सान, सूरज ना बदला, चाँद ना बदला, ना बदला आसमान... कितना बदल गया इन्सान!'' गीत पर गौर करेंगे तो पायेंगे कि सूरज भी वही है, चाँद भी वही है, सितारे भी वही हैं, आसमान भी वही है, बदला है तो सिर्फ इन्सान। सोचने की बात है कि अगर इन्सान बुरा बन सकता है तो वह अच्छा भी तो बन सकता है। हाँ, बुरा बनने के लिए मेहनत नहीं करनी पड़ती है। जैसे जंगल उगाने के लिए मेहनत नहीं करनी पड़ती लेकिन बगीचा बनाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है।

उम्र का प्रमाण-पत्र किसी के पास है क्या?

अधिकतर लोगों में यह बात घर किये रहती है कि अभी उम्र ही क्या है, जो ज्ञान सीखने में वक्त बर्बाद करें। परंतु विचारणीय बात यह है कि क्या कोई मनुष्य उम्र का प्रमाण-पत्र लेकर पैदा होता है? क्या ज्ञान और साधना बुढ़ापे का कृत्य है? उस समय तो शरीर निस्तेज हो जाता है, आवाज़ में कंपन आ जाती है, एक पैर संसार और एक पैर श्मशान में लटका नज़र आता है। थोड़ी-सी चेतना लिए ज़िंदगी चलती-फिरती लाश में बदल जाती है। शरीर दवाइयों पर निर्भर हो जाता है। अत: साधना और ज्ञान का अर्जन बुढ़ापे का कृत्य नहीं है। ज्ञान के लिए घरबार को त्यागने की आवश्यकता भी नहीं है, विकार त्यागने की आवश्यकता है। ज्ञान से तो आत्मिक आनंद, श्रद्धा और शान्ति उपजती है इसलिए सभी दवाओं की दवा 'आध्यात्मिकता' जीवन में ज़रूरी है।

वक्त को सीढ़ी बना लो

भगवान कहते हैं – वक्त को सीढ़ी बना लो तो ऊपर चढ़ जायेंगे। आज हर व्यक्ति इस धोखे में जी रहा है कि उसका होना, उसके परिवार के लिए निहायत ज़रूरी है। यदि गरीब वर्ग का होगा तो सोचेगा कि मेरे न होने से परिवार टूट जायेगा, पत्नी आत्महत्या कर लेगी, बच्चे सड़कों पर भीख माँगेंगे। अगर थोड़ी ऊँची हैसियत वाला होगा तो सोचेगा कि मेरे बिना न चल पायेगा यह समाज, ये सब झूठे भ्रम हैं। ऐसे लोगों की स्थिति उस चूहे जैसी है जो मालगाड़ी के नीचे दौड़ता जा रहा था, इस अहंकार के साथ कि मेरे बिना न चल सकेगी यह मालगाड़ी।

गलतफ़हमी से बचो

एक कहानी याद आती है – एक गाँव में एक झगड़ालू महिला रहती थी। उसे कोई भी पसंद नहीं करता था। उसका साथी था एक मुर्गा जिसे हमेशा वो अपने साथ रखती थी। गाँव के लोग चाहते थे कि वह गाँव से चली जाए। महिला भी गाँव वालों से नाराज़ थी। आखिर उसने एक दिन गाँव छोड़ने का फैसला कर लिया। जाने से पहले उसने ग्रामीणों से कहा, मैं गाँव छोड़कर जा रही हूँ और अपना मुर्गा साथ लिए जा रही हूँ, इसके बाँग देने से गाँव में सवेरा होता था, तुम लोगों को पता तब चलेगा जब गाँव में सदा के लिए अंधेरा हो जायेगा। वह मुर्गे को लेकर दूसरे गाँव में चली गई। अगले दिन उसके मुर्गे ने बाँग दी और वहाँ सवेरा हो गया, वह बोली – देखा, अब यहाँ सवेरा है लेकिन पिछले गाँव में तो रात ही रहेगी। यह बात पक्की हो गई कि मेरे मुर्गे के बाँग देने से ही सवेरा होता है। महिला की बात सुनकर पास ही बैठे बुजुर्ग संत बोले, ' बेटी, सर्वथा गलत सोच रही

हो, दिन निकलने पर मुर्गा बाँग देता है, न कि उसके बाँग देने से दिन निकलता है। सूर्योदय और सूर्यास्त को प्रकृति संचालित करती है। उस महिला की तरह कुछ लोगों को यह गलतफ़हमी हो जाती है कि उनके बगैर पत्ता भी हिल नहीं सकता। सच तो यह है कि किसी के बिना, किसी का कोई काम नहीं रुकता। खुद को कर्त्ता मानकर जो जुता हुआ है वह ऐसे ही गलतफ़हमी में जीएगा, इसके विपरीत करनकरावनहार शिव परमात्मा को सामने रखने वाला यही सोचेगा कि यह सब सृष्टि-ड्रामा का खेल है, मैं भी इसमें कलाकार हूँ।

मनमनाभव

उत्तराखण्ड में हुआ हादसा देश तो क्या लेकिन सारे विश्व को स्तब्ध कर देने वाला था। लोगों ने अपने सामने अपनों को काल के गाल में जाते हुए देखा लेकिन कुछ भी ना कर सके। वक्त के रुख को देखकर लगता है कि इससे बड़े हादसों का भी सामना करना पड़ सकता है। इसलिए भगवान कहते हैं, 'मनमनाभव' अर्थात् सबसे मन हटाकर मुझ परमात्मा में मन लगाओ। तर्क की तलवार एक ओर रखकर एक कदम उजाले की दिशा में रखो जिसे 'प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय' के माध्यम से परमात्मा बिखरा रहे हैं इस भूमंडल पर। अगर कोई यह सोचे कि वहाँ जाने से स्थूल रूप से लाटरी लग जाये तो उसके लिए यह जगह अनुकूल नहीं है। यहाँ तो जिसे अपना मानकर बैठे हो, उससे भी मन को न्यारा करना पड़ेगा।

निमित्त भाव से जीओ

धन के बीच जीओ, रहो पर धन अंत:करण में प्रवेश ना कर पाये, ठीक उस बैंक प्रबन्धक की तरह जिसके संरक्षण में अरबों-खरबों रुपये हैं। वो जानता है कि मेरा कुछ भी नहीं है, मैं तो रखवाला हूँ, मुझे मेरी निश्चित तनख्वाह पर निर्भर रहना है, यह सब सरकार का है। इसी प्रकार, निमित्त भाव को अपनाकर मानव भी धन के बीच रहते, संबंधों के बीच रहते सुख का अनुभव कर सकता है। परमपिता परमात्मा शिव अवतरित हुए हैं, चुम्बक की तरह रूहों को अपनी ओर खींचने के लिए। चुम्बक लोहे को तब खींचती है जब लोहे पर जंक ना हो। बुराइयों रूपी जंक एक-दो बार के ध्यान से नहीं उतर जाती, इसके लिए धैर्य रख साधना में रत रहना अनिवार्य है। जैसे बीज को अंकुरित होने में अनुकूल हवा, पानी, धूप एवं मिट्टी चाहिए, इसी तरह से योगाभ्यास में एकाग्रता के लिए पाँच विकारों की गठरियाँ उतर जानी चाहिएँ तभी मनइच्छित फल प्राप्त होगा। वर्तमान समय शिव भगवान विकारों की गठरियाँ उतार रहे हैं इसलिए कहा जाता है –

वीणा टूट गई तो
गाने से क्या होगा?
गाड़ी छूट गई तो
स्टेशन जाने से क्या होगा?
चिड़िया चुग गई खेत
तो पछताने से क्या होगा?
अब नहीं तो कब नहीं।

❖

विशेष सूचना

पाठक भाई-बहनों के स्नेह भरे सहयोग से ज्ञानामृत पत्रिका ईश्वरीय सेवा का लम्बा सफर तय कर 50वें वर्ष में प्रवेश कर गई है। इसका जुलाई अंक स्वर्ण जयन्ती विशेषांक होगा। आप सभी से नम्र निवेदन है कि ज्ञानामृत पढ़कर आपके हृदय में जो उद्‌गार उठते हैं, इससे आपको जो लाभ मिला, दिव्य परिवर्तन हुआ, कोई प्रेरणा मिली या दिव्य अनुभूति हुई उसे चंद शब्दों में लिख भेजिए, उसे विशेषांक में प्रकाशित किया जाएगा। अपना पूरा नाम, पद या व्यवसाय भी अवश्य लिखें, फोटो भी भेज सकते हैं।

– सम्पादक

मुरली के बोल, भगवान के बोल

● ब्रह्माकुमार डॉ. रमेश चन्द सैनी, रुड़की

अरावली पर्वत शृंखलाओं के मध्य स्थित पांडव भवन एक ऐसा मीठा घर है जो सारे विश्व में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मुख्यालय के रूप में प्रसिद्ध है। स्वयं भगवान ने इसकी स्थापना की है। इसमें ऐसे चरित्रवान भाई-बहनें रहते हैं जिनकी सारे विश्व में कीर्ति फैल रही है। यह मधुबन घर तपस्या स्थली भी है। इसमें रहने वाले बहन-भाइयों ने अपने जीवन की डोर स्वयं परमात्मा के हाथों में सौंप रखी है और ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर, तपस्या के बल से योगी जीवन बनाया है। किसका मन नहीं करेगा ऐसे मधुबन को स्वयं आकर देखने को! यहां की स्वच्छता, पवित्रता तो बहुत ही निराली है और योगयुक्त ब्रह्मा भोजन ऐसा जो देवताओं को भी दुर्लभ है। भाई-बहनों का प्यार, सादगी, सुन्दर सुगन्धित पर्यावरण बड़ा मनोहारी है।

जीवन-दिशा में परिवर्तन

पहले मैंने भी नहीं सोचा था कि मधुबन ऐसा होगा परन्तु जब मैं रुड़की आश्रम की निमित्त बहन के माध्यम से मधुबन पहुँचा तो आश्चर्यचकित रह गया यह सोचकर कि ऐसे स्थान की स्थापना करना किसी साधारण मनुष्य का काम नहीं है, यह तो स्वयं भगवान की अवतरण स्थली है। इसके उपरान्त तो मैं स्थानीय आश्रम पर रोज़ जाने लगा और जीवन की दिशा में सम्पूर्ण परिवर्तन आ गया। मैं क्या था, क्या बन गया, मेरा जीवन कैसे सुधर गया, यह सोचकर मैं स्वयं आत्मविभोर हूँ।

प्रश्न उठने का सिलसिला बन्द हो गया

आज अपने हृदय के दर्पण को जब चमकते हुए देखता हूँ तो यह विश्वास ही नहीं होता कि 22 साल पहले मैं कैसा था। यह आत्मा विकारों से, अहंकार से, दु:खों से भरपूर थी। यह इतनी गिरी हुई थी कि कोई भी नहीं पूछता था। पहली बार आश्रम जाने पर निमित्त बहन का बेहद रूहानी स्नेह मिला। इतना स्नेह दिया कि कदम स्वत: ही रोज़ आश्रम जाने के लिए उठने लगे। राजयोग का साप्ताहिक कोर्स करने के बाद लगा कि भगवान इस टूटी हुई ईंट को भी कहीं लगाना चाहते हैं। धीरे-धीरे आत्मबल मिलने लगा, स्वपरिवर्तन होने लगा, परमात्मा से योग लगता गया। जहां सबके प्रति मन में गिले-शिकवे-नाराज़गी थी, अपने आपसे लड़ाई चल रही थी, पारिवारिक झगड़े और कलह-क्लेश थे, मन में प्रश्न थे कि मेरे साथ ही ऐसा क्यों हुआ, वहां परमात्मा ने दया भाव, रहम भाव भर दिया। इतनी शक्ति भर दी कि प्रश्न उठने का सिलसिला ही बन्द हो गया। हर एक के प्रति मन में सकारात्मक विचार आ गए। घर का वातावरण सुधरने लगा।

सबका जीवन सुधर गया

ईश्वरीय महावाक्यों ने सिखाया कि नेगेटिव को पॉजिटिव में बदलो, हर बात को तुरन्त बिन्दी लगाओ, बीते को भूल जाओ और क्षमा कर दो, गृहस्थ व्यवहार में, कमल फूल के समान न्यारे रहते हुए प्रभु पिता की याद में रहो। भाइयो और बहनो, यह विकारी आत्मा तो किसी योग्य नहीं थी। शिवबाबा ने इतना प्यार दिया कि अब पांच बच्चों के परिवार में सबका जीवन सुधर गया है। एक पुत्र प्रभु को समर्पित हो गया है। इतना भरा-पूरा प्रभु परिवार मिला, शुक्रिया भगवान आपका।

मिला है आत्मिक सुख

अब वर्तमान और भूतकाल के जीवन की तुलना करके सोचता हूँ, कितना अंतर आ गया है। प्रभु से प्राप्तियाँ पल-पल हो रही हैं और विश्वास अटूट हो गया है। अब तो ऐसा लगता है कि मन-वचन-कर्म से श्रेष्ठ कर्म कर पुण्यों से झोली भर लूं। सच, भगवान का ज्ञान मिलने से आत्मा को आत्मिक सुख प्राप्त हो गया, सहारा मिल गया। बहनों के

सादगी भरे जीवन की, उनके शुद्ध आहार, दिव्य व्यवहार, पवित्र विचार, त्याग, सेवा तथा धर्म, जाति, ऊंच-नीच के भाव से मुक्त जीवन की गहरी छाप लग गयी। मुरली के महावाक्य भगवान के बोल हैं, किसी साधारण मनुष्य के बोल नहीं। ये महावाक्य ज्ञान में आने से अब तक रोज़ श्रवण कर रहा हूँ। दिल से निकलता है, भगवान आपका बार-बार शुक्रिया। ❖

बेहद का संन्यास

ब्रह्माकुमार राजूभाई, आबू पर्वत (अनाज विभाग)

किशोर अवस्था में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी देखकर मुझमें आध्यात्मिक रुचि जागी थी। कुछ समय गुज़रने के बाद मैं अधिक ज्ञान पाने की चाहत में तेजपुर (केतकीबाड़ी) सेवाकेन्द्र पर पहुँचा। वहाँ का शुद्ध वातावरण मेरे मन को भा गया। जब निमित्त बहन जी से मिलाया गया तो मैंने अपना लक्ष्य स्पष्ट बता दिया कि मुझे परमात्मा से मिलना है इसलिए मैं घर छोड़कर यहाँ रहना चाहता हूँ। बहन जी ने मुझे तेजपुर की भेंट में नजदीक की एक गीता पाठशाला में जाकर ज्ञान सीखने की सलाह दी। उस ठिकाने पर पहुँचा तो वहाँ के निमित्त भाई ने अगले दिन आने का समय दिया। अगले दिन निश्चित समय पर पहुँचा तो देखा, दरवाजा खुला हुआ था, अन्दर कोई नहीं था। मैं इधर-उधर टहलने लगा।

बाजू में एक घर के छोटे-से कमरे में लाल प्रकाश दिखाई दे रहा था। मैं चुम्बक की तरह आकर्षित होकर अन्दर जाकर बैठ गया। बैठते ही मैं उड़ गया। चारों ओर सफेद किरणों के बीच लाइट के कायाधारी ब्रह्माबाबा मुसकराते हुए दिखे, मैं आनंद के सागर के तले में चला गया। बाबा की दृष्टि से गहरी शान्ति और प्रेम, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होने लगा। समय का कुछ पता नहीं चला लेकिन जब मैं नीचे की स्टेज में आया तो पीछे से एक बहन मुझे वहाँ से उठने के लिए आवाज़ दे रही थी क्योंकि मैं बिना पूछे दूसरे के घर में जाकर बैठ गया था। उस आनंद के तले से बाहर आने की बिल्कुल इच्छा नहीं हो रही थी। आखिर उठना ही पड़ा लेकिन बाबा का वह मुसकराता हुआ चेहरा पल भर के लिए भी विस्मृत नहीं हुआ।

भक्ति मार्ग में मैंने गीता पढ़ी थी। गीता के अनुसार मैं यही समझ रहा था कि मैं परमात्मा में लीन हो जाऊँगा। अन्दर में लगन थी कि बस शरीर छोड़ कर परमात्मा में लीन होना है। इस ख्याल से कोर्स सुना-अनसुना कर दिया। कोर्स के बाद क्लास में आँखें बन्द करके बैठता था। एक ब्रह्माकुमारी बहन मुरली पढ़कर सुनाती थी।

एक दिन मुरली में आया, **बच्चे, यहाँ कुछ भी छोड़ने की बात नहीं है, तुम भल घर में रहते हो परन्तु आत्म-अभिमानी बन देह की सुध-बुध भूल अशरीरी हो जाते हो, यही बेहद का संन्यास है, इसको ही जीते जी मरना कहा जाता है।** ज्ञान मुरली के इन शब्दों से मेरी बुद्धि खुल गयी, अनुभव होने लगा कि स्वयं परमात्मा पिता सामने बैठ मुझे समझा रहे हैं। मुझे समझ में आ गया कि बिना परमात्म-ज्ञान के केवल शरीर छोड़ने से परमात्मा से मिलना सम्भव नहीं है।

कुछ ही दिन ज्ञान मुरली श्रवण से तीनों लोकों में, तीनों कालों में कुछ भी जानने को बाकी नहीं रहा। इसके बाद घर के सभी सदस्य इस ज्ञान से अवगत हुए। तामसिक आहार-व्यवहार, लड़ाई-झगड़ा आदि सब छू-मंत्र हो गये। घर में खुशहाली छा गई। सारा परिवार ईश्वरीय सेवा में व्यस्त हो गया। एक साल के अन्दर गरीबी हट गई, झोपड़ी से मकान बन गया। कुछ समय बाद मैं आत्मा भी इस महायज्ञ में पूर्ण रूप से समर्पित हो गया। वर्तमान समय पांडव भवन में अनाज विभाग में सेवारत हूँ। ❖

अनिद्रा से मुक्ति

● ब्रह्माकुमार के.एल.छाबड़ा, रुड़की

यदि आपको दिनभर कमजोरी और आलस्य महसूस हो या फिर हर समय सोने का मन करे, तो मुमकिन है कि आप नींद की कमी से जूझ रहे हों।

अनिद्रा सामाजिक, व्यवसायिक कार्यों में अथवा अन्य आवश्यक कार्यक्षेत्र में महत्वपूर्ण हानि पहुँचाती है। सतर्कता, एकाग्रता तथा रोज़ाना के कार्यों में भी अनिद्रा के कारण समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। अनिद्रा के कारण बीमार होने का जोखिम बढ़ जाता है और भावनात्मक अथवा मानसिक समस्यायें भी हो सकती हैं। अनिद्रा की वजह से बहुत से वाहन दुर्घटनाग्रस्त होते हैं। दक्षिण कोरिया के प्रमुख अस्पतालों और यूनिवर्सिटी ने मिलकर एक अध्ययन किया जिसके अनुसार नींद की कमी से हाई ब्लड प्रेशर की समस्या 70 प्रतिशत तक बढ़ जाती है।

आप चिकित्सक को अपनी मानसिक समस्या बताते हैं तो वे नींद की दवा दे देते हैं, जो धीरे-धीरे आदत में शुमार हो जाती है। दवा के गलत प्रभाव भी हो सकते हैं। हाँ, योग्य, अनुभवी एवं जनहितकारी चिकित्सक दवा की डोज़ धीरे-धीरे कम करते हुए अनिद्राग्रस्त व्यक्ति को जीवन-शैली में बदलाव लाने और तनावमुक्ति के उपाय अपनाने को कहते हैं।

क्यों आती है नींद?

सुबह शारीरिक क्रियायें (बॉडी फन्कशन्स) शुरू होते ही मस्तिष्क में 'स्लीप हारमोन्स-मेलाटोनिन' का स्त्राव होने लगता है ताकि रात होते-होते नींद की गोद में चला जाए इंसान। उम्र ढलने के साथ-साथ प्रकाश के प्रति बॉडी क्लॉक (शारीरिक घड़ी) की संवेदनशीलता कम होती जाती है, यही वजह है कि दिन में बुजुर्गों को युवाओं के मुकाबले ज्यादा नींद आती है। बॉडी क्लॉक ठीक तरह से तभी काम करती है जब व्यक्ति का सोने-जागने, खाने-पीने और व्यायाम करने का समय तय हो।

कितनी नींद चाहिये?

कितनी नींद लेनी चाहिए, इस पर अलग-अलग राय हैं। आमतौर पर एक वयस्क के लिए छः घंटे की नींद अच्छी मानी जाती है लेकिन योगी तीन-चार घंटे की नींद से ही तरोताजा हो जाते हैं। जिन्हें अर्थोपार्जन हेतु सुबह से शाम तक कार्य करना पड़ता है उन के तन-मन के लिए रात में जल्दी सोना और प्रातः जल्दी उठना अच्छा है। रात्रि को अगर चार पहरों में बांट लें तो द्वितीय पहर (9 से 12) के बीच ली गई नींद अन्य पहरों के मुकाबले ज्यादा आराम देती है। अपनी-अपनी प्रकृति के हिसाब से कायदे की नींद बेहद ज़रूरी है। ध्यान सबको रिलेक्स करता है पर अच्छी नींद की बराबरी नहीं कर पाता।

फ्रांस की कैथोलिक यूनिवर्सिटी की एक रिसर्च में दावा किया गया है कि अच्छी नींद लेने वाले लोग ज्यादा रचनात्मक होते हैं। उनमें कहीं ज्यादा एनर्जी होती है। रात में ठीक से नहीं सोने वाले अपने काम में ज्यादा गलतियाँ करते हैं। वे लोग कितने भाग्यशाली हैं, जो बिना किसी दवा के, बिस्तर पर लेटते ही सो जाते हैं।

ज़रूरी है जीवन-शैली में बदलाव

बदलती जीवन-शैली ने बड़ों के साथ-साथ बच्चों और किशोरों को भी प्रभावित किया है। यही कारण है कि बच्चे भी अनिद्रा के शिकार हो रहे हैं। इसके पीछे 'कार्बोनेट' आधारित पेय पदार्थों के प्रति बच्चों की दीवानगी को बड़ी वजह माना जा रहा है। ब्रिटेन की संस्था 'स्लीप स्टडी काउन्सिल' की शोधकर्त्ता जेसिका एलेक्जेंडर ने कहा है कि सोने से ठीक पहले खाना ना खायें और कैफिन-युक्त पेय अथवा सॉफ्ट ड्रिंक से परहेज करें।

एक ओर विज्ञान द्वारा उपलब्ध कराये साधनों ने हमारे शारीरिक श्रम को बहुत कम कर दिया है और दूसरी ओर हम ज्यादा कैलोरीयुक्त खान-

पान के अभ्यस्त होते जा रहे हैं जिससे एक तो मोटापे की समस्या बढ़ रही है, दूसरा, आवश्यक शारीरिक श्रम के अभाव में हम प्राकृतिक गहरी नींद को खोते जा रहे हैं।

बेहतर नींद के लिए कुछ सुझाव

सोने से पूर्व कम्प्यूटर अथवा टी.वी.के प्रयोग एवं किसी प्रकार की बहस से बचें। कुछ देर 'कर्णप्रिय' संगीत सुनना सहायक होगा। आदत डालें कि सोने का समय निश्चित हो। जब नींद आने लगे, तभी सोने जायें। शयन-कक्ष स्वच्छ, शान्त एवं अनुकूल रखें। तनावमुक्त होकर सोने की आदत डालें। तनावमुक्ति के लिए कहना तो आसान है परन्तु उसे छोड़ पाना मुश्किल अनुभव होता है। तनाव से निजात पाने में ध्यान मदद करता है।

सोने से पूर्व चटपटे व मसालेदार भोजन से दूर रहें। कैफिन-एलकोहल का सेवन न करें तो अच्छा है। अगर नींद नहीं आ रही है, तो कोई रोचक किताब पढ़ें। नियमित रूप से व्यायाम करें, खासकर दिन के प्रारम्भ में अथवा शाम की शुरूआत में। यथा सम्भव दिन में सोने से बचना चाहिए, तथापि कोई रात में जगता है तो दिन में कुछ समय के लिए सो सकता है। गर्मी के दिनों में दिन में कुछ देर सोना वर्जित नहीं है। सिर, तलवों एवं हथेली पर सोने से पूर्व मालिश करना वांछनीय है। मालिश से सपने नियंत्रित होते हैं। सोने से पहले हलका गर्म दूध पीना भी सोने में मदद करता है।

जो प्राप्त है, उसका आनन्द लें

उपरोक्त सभी बातें तभी सहायता करती हैं जब हम मानसिक रूप से किसी हद तक स्वस्थ हैं। तन के अच्छे स्वास्थ्य के लिए मन का स्वस्थ होना प्रथम आवश्यकता है। मन में सुकून के लिए अपनी सोच को बदलें। जो हमारे पास है उसका आनन्द लें और जो नहीं है उसे याद कर दु:खी न हों। किसी भी बात को लिखने से तनाव और पीड़ाएँ कम होती हैं। नींद तभी आती है जब हम अपने मस्तिष्क को निष्क्रिय कर लेते हैं। कुछ भी हो, हम मानसिक तौर पर अच्छी पृष्ठभूमि बना लें तो नींद अच्छी आ सकती है।

इस आपाधापी के युग में कभी-कभी समस्याओं का आना स्वाभाविक है। यदि परेशान हैं तो तुरन्त सोने की तैयारी न करें। अच्छा होगा, मन को पहले शान्त करें और महसूस करें कि शरीर शिथिल होने जा रहा है। मतलब यह है कि शरीर और मन को पूरी तरह शान्त करें। मन पूरी तरह अपने काबू में किया जा सकता है। ऐसे मन को ही 'शिक्षित मन' कहते हैं। यह ही एक अच्छे व्यक्तित्व का लक्षण है। यदि हम ऐसा कर लेंगे, तो नींद कोई समस्या नहीं होगी। अक्सर लोग नींद की दवाई लेने लगते हैं परन्तु यह अच्छी आदत नहीं है। इसके लेने से लगता है जैसे कि हम नशे में हैं। सुस्ती आती है। सबसे खतरनाक बात तो यह है कि इसकी आदत पड़ जाती है। अच्छा होगा कि हम पांच से दस मिनट मनन एवं ध्यान करें। ऐसा करने से मन शान्त हो जायेगा, सोने में जल्दी मदद मिलेगी और सुबह हम तरोताजा उठेंगे।

राजयोग द्वारा अनिद्रा से मुक्ति

लेखक ब्रह्माकुमारीज़ के जिस सेवाकेन्द्र पर आध्यात्मिक लाभ के लिये जाता है वहाँ एक माता को सेवाकेन्द्र पर आने से पूर्व पाँच साल से नींद नहीं आ पा रही थी। आखिर अनिद्रा से परेशान होकर वह दवाइयों का सहारा लेने के लिए अपने शहर के जिस चिकित्सक के पास गयी, संयोग से वह चिकित्सक ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सिखाये जाने वाले राजयोग (मेडिटेशन) से परिचित था। उसने अनिद्रा रोग से पीड़ित उस माता को राजयोग सीखने की सलाह दी। राजयोग के अभ्यास से उस माता को शनैः शनैः अनिद्रा की जटिल समस्या से छुटकारा प्राप्त हो गया। आज वह 60 से अधिक वर्ष की उम्र में तन और मन से स्वस्थ जीवन व्यतीत कर रही है और बहुत खुशमिजाज रहती है। यह तो एक उदाहरण मात्र है। ऐसे अनेक लोगों को राजयोग से बहुत लाभ हुआ है, जो अनिद्रा रोग से पीड़ित थे।

राजयोग (मेडीटेशन) के अभ्यास से मस्तिष्क की तंत्रिका प्रणाली को सामान्य रूप से कार्य करने में सहायता मिलती है। मस्तिष्क शरीर के विभिन्न अंगों को बेहतर ढंग से दिशा निर्देश दे पाता है और हारमोन्स स्त्रवित करने वाले सभी सूक्ष्म अंग उचित प्रकार से अपना कार्य संचालन करते हैं जिससे शरीर के समग्र स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। नींद लाने के उत्तरदायी हार्मोन्स का स्त्राव भलीभाँति होने से बॉडी क्लाक ठीक रीति से काम करती है जिससे अपने निश्चित समय पर नींद आ जाती है।

राजयोग से विचार प्रवाह धीमा

हम सब जानते हैं कि हमारा मन सदैव कुछ ना कुछ सोचता रहता है। सामान्य व्यक्ति के मन में एक मिनट में 20-30 विचार उत्पन्न होते हैं। यदि विचारों का प्रवाह प्रति मिनट तीस से ज्यादा हो जाता है तो हम तनाव अनुभव करने लगते हैं। राजयोगी के मन में संकल्पों-विकल्पों यानि विचारों का प्रवाह अपेक्षाकृत धीमा होता है जिससे दिमाग कम थकता है, कम ऊर्जा खर्च होती है व आत्मिक बल बढ़ जाता है। प्रात: 4-5 बजे के बीच में तीस मिनट राजयोग का अभ्यास करने की आदत मन को आनन्दित व ऊर्जावान बनाती है। राजयोग का अभ्यास ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्रों पर नि:शुल्क सीखा जा सकता है। ❖

परमपिता परमात्मा का प्रेम

ब्रह्माकुमार वजीरचन्द गोयल, पंचकूला

परमपिता परमात्मा शिव हम मानव आत्माओं को बहुत-बहुत प्यार करते हैं। सवाल है कि हमने बाबा के प्यार का कितना अनुभव किया है। सब की अनुभूति अपनी-अपनी है। प्यारे बाबा, हर रोज़ ईश्वरीय महावाक्यों (मुरली) द्वारा ज्ञान रत्न बांटते हैं, गुणों की चर्चा करते हैं, दिल से चाहते हैं कि ये गुण मेरे बच्चों में आ जायें। मेरे मीठे बच्चे गुण धारण कर बहुत ऊपर उठ जाएँ। बाबा दिल से चाहते हैं कि मेरे बच्चे, मेरे जैसे निरहंकारी, निर्विकारी और निराकारी बन जाएँ।

प्यारे बाबा कहते हैं, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, दुख, दर्द, चिंता, उलझनें, गलतफहमियाँ, छल, आलस्य सब मेरी झोली में डाल दो, अपनी झोली खाली कर दो, हल्के हो जाओ, फरिश्ते बन जाओ। क्या अन्य कोई ऐसा कर सकता है? अपनी झोली विकारों आदि से भरवा कर, दूसरे की झोली हीरे-जवाहरातों से भर सकता है? एक परमपिता परमात्मा ही ऐसा कर सकते हैं क्योंकि वे अपने बच्चों को बहुत-बहुत प्यार करते हैं। शिव बाबा रोज़ मुरली में मीठे बच्चे, प्यारे बच्चे, सिकीलधे बच्चे, लाडले बच्चे कहने के साथ-साथ किसी न किसी स्वमान से अलंकृत करते हैं, जैसे कहते हैं, तुम लाइट हाउस हो, माइट हाउस हो, मेरे भाग्यशाली सितारे हो, नूरे रत्न हो, वफादार बच्चे हो, गले का हार हो, बेग़मपुर के बादशाह हो आदि-आदि। ऐसा क्यों कहते हैं? क्योंकि बाबा बच्चों को बहुत-बहुत प्यार करते हैं।

लौकिक दुनिया में माँ-बाप अपने बच्चों को बहुत प्यार करते हैं। सोचते हैं कि ये हमेशा खुश रहें, कोई दुख-दर्द न आये। इन्हें खाने के लिए बढ़िया भोजन हो, सेवा के लिए सेवाधारी हो, घूमने-फिरने के लिए साधन हो, धन हो, खूब मान-सम्मान हो, अच्छा पद हो, रहने के लिए अच्छा मकान हो आदि-आदि। परमात्मा पिता भी हमारे मात-पिता हैं। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के माध्यम से उन्होंने हमें मुख-वंशावली बच्चे बनाया है। लौकिक माता-पिता के प्यार में स्वार्थ होता है, बाबा का प्यार नि:स्वार्थ है। लौकिक में दो या चार बच्चे होंगे लेकिन बाबा के तो बेहद बच्चे हैं, सबको एक जैसा प्यार करते हैं, एक जैसी शिक्षा देते हैं।

बाबा दाता हैं, हमें भी तो उन्हें कुछ देना चाहिए। सब से बढ़िया रिटर्न (Return) है, टर्न (Turn) करना, अपने आप को परिवर्तित कर बाबा के समान बनना। जब बाबा के समान बनेंगे तो बाबा कितने खुश होंगे। ❖

कमी को गुण में बदलो

● ब्रह्माकुमारी कोमल, बराड़ा (अम्बाला कैन्ट)

किसी की कमी-कमजोरी का मजाक उड़ाना या कमियाँ देखकर किसी से किनारा कर लेना, कमियों के कारण किसी को ठुकरा देना या किसी के कमजोर पहलू का नाजायज़ फायदा उठाना, यह तो कलियुगी मनुष्यों में आम बात है लेकिन किसी की कमी को सद्‌गुण में बदल कर उसके दुख, ग्लानि, पश्चाताप को समाप्त कर देना, यह किसी दिव्य फरिश्ते का ही महान कर्म हो सकता है। आइये, इस किसान से शिक्षा लें –

एक किसान अपने कंधे पर रखे लकड़ी के डंडे के दोनों सिरों पर बंधे दो घड़ों से पानी भरकर ले जाता था। एक घड़े में सुराख था। इस कारण वह गन्तव्य तक पहुँचने तक रिस-रिस कर आधा रह जाता था। एक दिन उसका उदास चेहरा देख किसान ने कारण जानना चाहा तो घड़े ने अपनी कमी का वर्णन कर दिया और किसान से माफी भी मांगने लगा।

ऊँचे और महान विचारों वाले किसान ने अगले दिन, रास्ते में उगे फूल घड़े को दिखाए और कहा, तुम्हारे रिसते पानी का सदुपयोग करने के लिए तुम्हारी तरफ के रास्ते में फूलों के बीज डाले गए, जो अब खिलकर भगवान को अर्पित करने लायक हो गए हैं। तुम्हारी कमी भी काम में आ रही है। यह सुनकर घड़ा अपनी कमजोरी का दुख भूल गया।

कमजोर को चाहिए सहानुभूति, न कि नफरत

यदि कोई संक्रामक रोग से पीड़ित होता है तो उसे सबसे अलग रख पौष्टिक भोजन दिया जाता है और अतिरिक्त देखभाल की जाती है। उससे नफरत कर उसे उपेक्षित नहीं किया जाता। इसी प्रकार यदि कोई आत्मा किसी कमी, कमजोरी या अवगुण से संक्रमित है तो उसे भी स्नेह, सहानुभूति तथा उमंग-उत्साह रूपी सात्विक भोजन और अतिरिक्त देखभाल की आवश्यकता है, न कि नफरत की, यही सच्ची सेवा है। उसकी किसी भी विशेषता को आधार बनाकर उसे आगे बढ़ाना ही उसे दुख से बाहर निकालने का श्रेष्ठ तरीका है।

गिरे हुए को गिराओ नहीं, सहारा दो

कमजोरी के चिन्तन से वायुमण्डल भारी और नकारात्मक हो जाता है, जो उस कमजोर आत्मा को और भी कमजोर कर देता है। जिन्हें उसे सहयोग देना चाहिए वे स्वयं भी नकारात्मक चिन्तन कर-कर के कमजोर बन जाते हैं। ऐसे में उस कमजोर आत्मा को कोई सहारा नज़र नहीं आता है। **अत: भगवान कहते हैं, गिरे हुए को गिराओ नहीं, उसे सहारा दो। किसी की कमी का चिंतन नहीं करो, उसे सहयोग का नोट दो।**

बाबा की युक्ति से घबराहट खत्म हुई

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा भी इतने सब बच्चों को सम्पन्न, सम्पूर्ण बनाने में इसलिए सफल हुए क्योंकि वे बच्चों की विशेषताओं की प्रशंसा कर, उमंग भरकर फिर कमी की तरफ ध्यान खिंचवाते थे जिससे बच्चे सहज ही कमी को स्वीकार कर उसे निकालने का पुरुषार्थ करते थे। एक बहन लिखने की शौकीन थी परन्तु भाषण करने से घबराती थी। बाबा ने उसकी कमी दूर करने के लिए युक्ति से कहा कि बच्ची, तुम बहुत अच्छा लिखती हो, आज की मुरली से एक टॉपिक पर 10 प्वाइंट लिखो, रात की क्लास में बाबा सुनेगा। रात को बाबा के सामने खड़े होकर सुनाते ही उस बहन की बोलने की घबराहट सदा के लिए खत्म हो गई और बाबा ने शाबाशी देकर उसे प्यार किया। ऐसे अनेक उदाहरण हैं ब्रह्मा बाबा की रूहानी पालना के। हमें भी बाबा समान रूहानी पालना देना सीखना है।

❖

विश्व एक परिवार के निर्माण में कलाकारों की भूमिका

● **ब्रह्माकुमार गोपाल प्रसाद मुदगल, भरतपुर**

यह माना जाता है कि जिस व्यक्ति में कला है उसकी भूमिका हर जगह है (He who has art has everywhere part)। कला के बिना संस्कृति अधूरी है। विश्व में जो कुछ सर्वश्रेष्ठ सोचा गया है व कहा गया है उसका ज्ञान ही संस्कृति है। अत: कलाकार और कलाएं सभ्यता और संस्कृति की सम्पन्नता का प्रतीक हैं। निकट अतीत में मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल (ई.सन् 1556 से 1605) पर एक दृष्टिपात करें। अकबर स्वयं कलाप्रेमी था तथा कलाकारों का सम्मान ही नहीं बल्कि उनका नियमित संग भी करता था। बादशाह अकबर के सभासद विभिन्न कलाओं के विद्वान हुआ करते थे। उसके नौ सभासद तो इतने प्रकांड विद्वान थे कि उन्हें शहंशाह के मुकुट के 'नव-रत्न' माना जाता था। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं, तानसेन महान संगीतज्ञ थे। टोडरमल वित्त विशेषज्ञ थे। अबुल फजल महान इतिहासज्ञ थे, उनके भाई फैजी प्रसिद्ध कवि थे। मानसिंह असाधारण युद्ध विशेषज्ञ थे। अब्दुल रहीम खानखाना महान कवि थे। इन सबमें सर्वोपरि बीरबल थे जो अपनी बुद्धि की कुशाग्रता, उदारता, न्यायप्रियता एवं वाक्‌चातुर्य के लिए प्रसिद्ध थे तथा जिनके किस्से आज तक घर-घर में बड़े प्यार से सुने व सुनाये जाते हैं । वे हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक भी थे। बादशाह अकबर द्वारा 'दीने इलाही' की स्थापना बीरबल के सहयोग से की गई।

चारों ओर दुख-अशान्ति

वर्तमान समय चारों ओर व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दुख-अशांति का वातावरण है। एक ओर विज्ञान का चर्मोत्कर्ष है तो दूसरी ओर विनाश की ज्वाला। नाना प्रकार के अणु अस्त्र-शस्त्र विश्व को तबाह करने के लिए तैयार खड़े हैं। चारों ओर आतंकवाद, भोगवाद का बोलबाला है । देश और विदेश में नफरत की आग, खून-खराबी का नजारा पेश कर रही है। प्रकृति ने भी मानो जैसे गुस्सा खाया है। पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। बाढ़, भूकम्प, सुनामी, ज्वालामुखी विस्फोट, महामारी आदि की आपदाएं दिनोंदिन बढ़ती जा रही हैं। विश्व की बात छोडें, घर-घर में गृह-क्लेश है। समाज का हर वर्ग विकृतियों से ग्रस्त है। कलाकार बन्धु भी समाज का अंग होने के कारण इन विकृतियों से अछूते नहीं हैं। हर मानव आत्मा के मूलगुणों – ज्ञान, पवित्रता, शांति, प्रेम, सुख, आनंद एवं शक्तियों का स्थान काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, आलस्य एवं अलबेलेपन ने ले लिया है।

अपनी प्यारी कलाएँ,
जो थी सतोप्रधान।
वे विकृति को धार कर,
हो गई तमोप्रधान।।

परमात्मा पिता का अवतरण हो चुका है

ऐसे परिदृश्य में 'विश्व एक परिवार' की परिकल्पना/संकल्पना दिवास्वप्न की भांति प्रतीत होती है। किन्तु अंग्रेजी की एक कहावत है, "There is always a silver lining behind the dark clouds" (काले बादलों के पीछे सदैव एक रोशनी की किरण होती है). संसार परिवर्तनशील है। प्रभात के बाद दोपहर, सायंकाल तथा रात्रि के बाद पुन: प्रभात होता है। इसी प्रकार ग्रीष्म, वर्षा, शीत एवं बसंत ऋतुओं का भी चक्र चलता रहता है। इस पर भी अंग्रेजी की एक कहावत है, "If winter has come Spring cannot be far behind" (यदि शीत ऋतु आ चुकी है तो बसंत भी दूर नहीं)। निश्चित ही वर्तमान कलियुग अन्त के बाद स्वर्णिम युग आना है। साथ ही शुभ समाचार यह है कि सृष्टि के रचयिता (Creator), निर्देशक (Director) एवं मुख्य अभिनेता

(Actor) निराकार, ज्ञानसागर, सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा शिव का सन् 1936 में दिव्य अवतरण हो चुका है। उन्होंने एक वृद्ध मानव तन का आधार लेकर तथा उन्हें कर्त्तव्यवाचक नाम 'प्रजापिता ब्रह्मा' देकर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना कराई हुई है।

परमपिता परमात्मा
कलाकार सिरमौर।
जिसने सुन्दर जग रचा,
उससे बड़ा न और।।

स्वर्णिम दुनिया के सत्य

परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के मुखारविंद द्वारा आने वाली स्वर्णिम दुनिया के सत्यों को उजागर करते हुए बताया है कि स्वर्ग में प्रवित्र प्रवृत्ति मार्ग होगा। सम्बन्धों में सम्पूर्ण पवित्रता होगी। योगबल से सन्तानोत्पत्ति होगी। स्वर्ग के निवासी आत्म-अभिमानी, मायाजीत, डबल अहिंसक, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, सर्वगुण सम्पन्न तथा मर्यादा पुरुषोत्तम होने के कारण देवी-देवता कहलायेंगे। वहां रोग, शोक, जरा तथा मृत्यु का भय नहीं होगा। मनुष्य आत्माएँ सतोप्रधान होने के कारण प्रकृति भी सतोप्रधान, सुखदाई होगी। सदा बहारी मौसम तथा सदा बहारी वनस्पति एवं फल-फूल होंगे। विज्ञान भी सुखदाई होगा। पशु-पंछी भी सुन्दर होंगे। स्वर्णिम दुनिया सुख-शांति एवं सम्पन्नता से भरपूर होगी। सोने-हीरे-जवाहरात के महल होंगे। देवताएँ बहुत सुन्दर वस्त्र एवं आभूषण धारण करने वाले होंगे जो सोने के किन्तु हलके होंगे। छत्तीस प्रकार के व्यंजनों से युक्त शुद्ध शाकाहारी भोजन होगा। स्वर्णिम दुनिया में पारिवारिक सम्बन्धों में आत्मिक प्यार एवं प्रसन्नता होगी।

स्वर्णिम दुनिया की कलायें

स्वर्णिम दुनिया में देवी-देवताएं सर्व कलाओं से सम्पन्न होंगे। सभी कलाएँ श्रेष्ठता सम्पन्न होंगी। वाद्य यंत्र भी हीरे-मोतियों से जड़े होंगे तथा उनके स्पर्श मात्र से मधुर स्वर लहरी गूँज उठेगी। नृत्य, नाटक, गायन तथा वक्तव्य भी संगीतमय होंगे। स्वर्ण मुद्राएं भी कलात्मक होंगी। वास्तुकला एवं स्थापत्य कला भी अद्भुत एवं मनोहारी होगी। इस प्रकार आने वाली स्वर्णिम दुनिया में 'विश्व एक परिवार' की संकल्पना साकार होगी।

कलाकारों का प्रथम योगदान

ऐसी दुनिया के निर्माण में कलाकारों की दुहरी भूमिका है। प्रथमत: वे आध्यात्मिक ज्ञान और सहज राजयोग के अभ्यास द्वारा अपनी आत्मा को ज्ञान, पवित्रता, शांति, प्रेम, सुख, आनंद एवं शक्तियों से सम्पन्न बनाएँ। प्रजापिता ब्रह्मा इसके जीते-जागते उदाहरण थे। उनका मानना था कि हर आत्मा के गुण-विशेषताएँ परमात्मा की देन हैं तथा उन्हें विश्व कल्याण के कार्य में लगाना आवश्यक है। उनमें साधारण से साधारण कार्य में असाधारणता भरने की कला थी। वे मनसा द्वारा शक्तियों का दान, वाचा द्वारा ज्ञान का दान तथा कर्मों द्वारा गुणों का दान करते हुए स्वर्णिम संसार की स्थापना की ईश्वरीय योजना के अग्रदूत बनकर 18 जनवरी, 1969 को सम्पूर्णता को प्राप्त हुए तथा आज भी सूक्ष्म वतन में प्रकाश की देह में रहकर विश्व परिवर्तन के कार्य में शिव बाबा के साथ संलग्न हैं।

दूसरा योगदान

कलाकारों का दूसरा योगदान यही होगा कि वे उपरोक्त प्रकार से स्व-सशक्तिकरण करके अपनी कलाओं को सतोप्रधान बनाकर विश्व की आत्माओं को लाभान्वित करें। इसके लिए इस विश्व विद्यालय की भगिनी संस्था राजयोग एज्यूकेशन एंड रिसर्च फाउण्डेशन के 18 प्रभाग बने हुए हैं जिनमें 'कला एवं संस्कृति' प्रभाग भी एक है। इसके अलावा इस विश्व विद्यालय के अनेक विभाग जैसे चित्रकला, प्रिन्टिंग, फोटोग्राफी, स्टूडियो इत्यादि भी हैं। इनके माध्यम से कलाकार विश्व कल्याण के लिए अपनी कलाओं को ईश्वरीय सेवा-योजना में सफल कर सकते हैं तथा परमात्मा से 21 जन्मों के लिए स्वास्थ्य, सम्पत्ति एवं प्रसन्नता का

ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त कर सकते हैं।
कलाकार की कला में, जादू अपरम्पार ।
एक सूत्र में बांधकर, भरदे मन में प्यार ।।
कलाकार निज कला से, करें विश्व कल्याण ।
'विश्व एक परिवार' का, करें सुखद निर्माण ।।

❖

दो खजाने– समय और स्वास्थ्य

● ब्रह्माकुमार प्रमोदकुमार, चेन्नई

जीवन के दो ऐसे पहलू हैं जिन पर मनुष्य बराबर ध्यान नहीं देता है। एक है समय का सही सदुपयोग करना तथा दूसरा है बीमारी आने से पूर्व स्वास्थ्य का सतर्कता से ख्याल करना। जिस व्यक्ति के पास तीन घण्टे सिनेमा घर में व्यतीत करने के लिए, घण्टों टी.वी. कार्यक्रम देखने के लिए, पूरा दिन क्रिकेट मैच देखने के लिए समय है, गप्पे लड़ाने, सैर-सपाटे करने, किट्टी पार्टी में जाने, गोल्फ खेलने, जुआ खेलने और गुलछर्रे उड़ाने के लिए समय है उसके पास शिव-स्मरण, ब्रह्ममुहूर्त में योगाभ्यास के लिए समय नहीं है, यह कैसे माना जाए? समय तो समय है, उसे वहाँ लगा सकते हैं तो यहाँ भी लगा सकते हैं। लोग कहते हैं, हम समय के अभाववश ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र में नहीं आ पाते हैं। मुरली (शिव भगवान का सन्देश) सुन नहीं पाते हैं। क्या हम रोजाना आधा घण्टा शिव पिता के लिए नहीं निकाल सकते हैं, जो हमारे पिता हैं। वे अदृश्य ज़रूर हैं पर उन्हें हमारी हर गतिविधि की जानकारी रहती है। वे सामने न दिखते हुए भी सामने रहते हैं।

घर बैठे आध्यात्मिक अध्ययन करें

विश्व विधाता, शिव दाता हम से ज्यादा हमारा कल्याण चाहते हैं क्योंकि वे जानते हैं, हम उनकी अपनी सन्तान हैं, चाहे हम उन्हें पारलौकिक पिता मानें या न मानें। अत: सेवाकेन्द्र पर जाकर ज्ञान सुनने का समय यदि न भी निकाल सकें तो कम से कम आध्यात्मिक पुस्तकों का अध्ययन कर समय का सही उपयोग घर बैठे भी कर सकते हैं। भगवान के प्रेम भरे गीत सुन कर मानसिक व्यथा दूर कर सकते हैं। शिव चिन्तन में खो कर अपने आप को धन्य कर सकते हैं। मन द्वारा परमधाम की यात्रा कर सकते हैं। ये चन्द तरीके समय के उचित उपयोग के लिए हैं। समय का सदुपयोग करने वाले ही महान आदमी बन सकते हैं।

दवा से ज्यादा परहेज पर ध्यान दें

दूसरा पहलू है तन्दुरुस्ती का जिसके प्रति सतर्क रहना अत्यंत अनिवार्य है। कहा गया है, जैसा अन्न वैसा मन। कसरत, प्रात: सैर, कम भोजन, विटामिन वाले भोजन, ये स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत अनिवार्य हैं। कई लोग इन पर ध्यान न देकर महँगे कपड़े, आभूषण, जूते, पाउडर, क्रीम पर ज्यादा धन और समय लगाते हैं। ये सब चीजें जिस शरीर पर सजाई जाती हैं, उस शरीर के स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देंगे तो इस बनावटी सजावट का क्या औचित्य? शरीर का चुस्त, दुरुस्त होना ही उसकी सुन्दरता है। उस स्वस्थ शरीर को जरूरतमंदों की सेवा में लगाने से उसकी सुन्दरता और बढ़ जाती है। स्वस्थ शरीर को पाप-कर्मों में लिप्त करने से सुन्दरता गिर जाती है। अत:अपनी शारीरिक और मानसिक हालत पर नज़र रखें। बीमारी आने से पहले ही रोकथाम करें। आलस्य त्यागें। परहेज, दवा से ज्यादा काम करता है। कम सोचें, ऊँची सोच सोचें। मन को सदैव शान्त अवस्था में रखें। शिव पिता के सच्चे बच्चे बनकर दिखाएं।

❖

मुसकराओ – मौत को भगाओ

● ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

एक नन्हा-सा बालक घर के प्रतिकूल हालात के कारण कभी मुसकरा नहीं पाता था। एक दिन बैग में चिप्स और पानी की बोतल लेकर वह खुशी ढूँढ़ने निकल पड़ा।

कुछ दूर चलने के बाद उसकी नज़र एक जगह बैठे हुए बुजुर्ग पर पड़ी जो पक्षियों के झुण्ड को निहार रहा था। बालक भी उसके पास जाकर बैठ गया। थोड़ी देर बाद बालक ने बैग से पानी की बोतल निकाली, फिर चिप्स निकाले। उसे लगा कि यह बुजुर्ग भी भूखा है इसलिए कुछ चिप्स उसकी ओर बढ़ा दिए। बुजुर्ग ने चिप्स लेकर बालक की ओर मुसकराकर देखा। बालक को बुजुर्ग की मुसकराहट बड़ी भली लगी क्योंकि उसके घर में तो कभी कोई मुसकराता ही नहीं था। सब गुमसुम और आपस में नाराज़ रहते थे।

बालक के मन में आया कि एक छोटी-सी चीज देने से इतनी प्यारी मुसकराहट मिल सकती है तो कुछ और दूँगा तो और भी मिलेगी। अब उसने पानी की बोतल भी बुजुर्ग की ओर बढ़ा दी। बोतल लेकर बुजुर्ग ने पुन: मुसकराकर उसकी ओर देखा। बच्चे को समझ में एक राज़ आया कि मुसकान और खुशी नि:स्वार्थ भाव से देने के बाद मिलती हैं फिर चाहे हम कोई छोटी-बड़ी वस्तु दें या कोई गुण दें या फिर मुसकराहट ही दें, पर किसी को कुछ दें अवश्य, प्यार, विश्वास या अपनापन दें।

शाम तक दोनों साथ-साथ बैठे रहे। सांझ देख बालक ने सोचा, अब घर चलना चाहिए। वह उठा, कुछ कदम चला, फिर ठिठका और पलटकर बुजुर्ग के पास आकर उसे बाँहों में भर लिया। बदले में बुजुर्ग के होठों पर और बड़ी मुसकराहट आ गई।

बालक खुशी में नाचते हुए घर पहुँचा। माँ ने खुशी का राज़ पूछा, तो बालक ने कहा, आज मैंने एक फरिश्ते से मुलाकात की, उसके जैसी मुसकान मैंने आज तक कहीं नहीं देखी। उधर बुजुर्ग ने भी खुशी और शान्ति के प्रकम्पन लिए घर में प्रवेश किया। इनकी प्राप्ति कहाँ से हुई, यह पूछने पर उसने भी कहा, आज मेरी मुलाकात एक फरिश्ते से हुई जो मेरी अपेक्षा के विपरीत बहुत छोटी उम्र का था।

कहानी का सार यही है कि नि:स्वार्थ मुसकान हमें फरिश्ता बना देती है। इससे बड़ी-बड़ी समस्याएँ टल जाती हैं। विनम्रता बहुत बड़ी ताकत है। मुसकराहट एक औषधि भी है जो अकाल मृत्यु रूपी कष्ट को, बीमारियों को व बुढ़ापे को भी दूर भगाने में सक्षम है। किसी ने ठीक ही कहा है –

उमर किसी की कम, किसी की लम्बी है।
परन्तु मौत तो महा स्वावलम्बी है।।
मौत स्वयं ही अपना फैसला लेती है।
किसी के चिन्ता करने से वह नहीं रुकती है।
मौत की चिन्ता कर, स्वयं को नहीं डराओ।
मौत जब भी डराये, आप सदा मुसकराओ।।
आ जाती है हिम्मत, दो पल की मुसकान से।
मुसकराओ ज़िन्दगी भर, जीओगे शान से।।
याद ये भी रखना हे मानव, मौत कभी मुसकराती नहीं।
कोयल-सी मीठी बोली में, कभी गीत गाती नहीं।।
मरने वालों को मौत, पहले कभी बताती नहीं।
मुसकराना तो छोड़ो, मौत को कभी हंसी आती नहीं।।
मौत जब भी दांत फाड़े, देख उसे तुम मुसकराओ।
ज़ोर से दहाड़े, तो तुम कोई गीत गुनगुनाओ।।
रहो यदि बुढ़ापे तक मुसकराते, तो वह डर जायेगी।
तुम्हारी मौत, तुम्हारे सामने ही मर जायेगी।।

जो बच्चे हिम्मत रखकर, निर्भय होकर आगे बढ़ते हैं, उन्हें परमात्मा पिता की मदद स्वत: मिल जाती है

अभिवादन

● ब्रह्माकुमार किशनदत्त अनुदर्शी, शान्तिवन

सृष्टि के आदि काल से ही परस्पर अभिवादन करने का शिष्टाचार रहा है। रात्रि में जब विश्राम करने का समय होता है तब एक-दूसरे को शुभ रात्रि (Good Night) कहकर और जब प्रात: काल नये दिन की शुरूआत करते हैं तब शुभ प्रभात (Good Morning) कहकर अभिवादन करते हैं। बातचीत का आरम्भ करने से पहले और विचार विमर्श पूर्ण होने के बाद भी अभिवादन करके हम आत्मीयता प्रकट करते हैं। अभिवादन के पर्यायवाची शब्द हैं — प्रणाम (Salute), नमस्कार, नमन, नमस्ते, सलाम, गुड मोर्निंग (Good Morning), गुड इवनिंग (Good Evening), गुड नाइट (Good Night), गुड डे (Good Day) इत्यादि-इत्यादि। अभिवादन के शब्द चाहे कोई भी हों परन्तु इस प्रक्रिया में हमारा अन्तर्भाव एक ही होता है। हम आपस में एक-दूसरे के लिये अपने शुभ भाव प्रकट करते हैं।

समय के क्रम में अभिवादन के नये-नये स्वरूप

काल, देश, परिस्थिति तथा संस्कृति के अनुसार अभिवादन के नये-नये शब्द सामने आते रहे हैं जैसे राम-राम जी, हरे कृष्ण, जय श्री कृष्ण, राधे-राधे, सलाम अलेकुम, सत् श्री अकाल, जय श्री सत् जी, हरिओम, हरिओम तत् सत्, ओमशान्ति आदि-आदि।

अभिवादन की अलौकिक विधि

अभिवादन की अलौकिक विधियाँ भी हैं। योगीजनों का अभिवादन अलौकिक होता है। योगी आत्माओं का आभामण्डल बहुत तेजस्वी होता है। उनके अभिवादन की विधि अत्यन्त चुम्बकीय होती है। वे जब भी किसी से मिलते हैं तो प्रथम परस्पर दृष्टि के द्वारा ही शक्ति (प्रकम्पनों) का आदान-प्रदान करते हैं। उनकी मुसकान भर से ऊर्जा का सम्प्रेषण हो जाता है। उनके अंग-अंग से आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रवाह होता है। राजयोग के उच्चतम अनुभवों से सम्पन्न वरदानी आत्माएँ दृष्टि के साथ-साथ अपने वरद हस्तों से भी शक्ति का सम्प्रेषण करती हैं। पल भर में एक अलौकिक ऊर्जा के स्फुरण का लेन-देन हो जाता है। नयनों ही नयनों में एक मौन वार्तालाप भी हो जाता है।

अभिवादन मूलमन्त्र है सद्व्यवहार का

अभिवादन की प्रक्रिया में एक मनोवैज्ञानिक रहस्य है। द्वापरयुग के आरम्भ से ही हमारे ऋषि-मुनियों ने अभिवादन को शिष्टाचार का आधार बनाया। गुरुकुल में विद्यापाठियों को करबद्ध (हाथ जोड़ कर) करके या मस्तक झुका करके आदर-सूचक शब्दों के द्वारा मधुरता से आत्मीय भाव लिये हुए अभिवादन करना सिखाया जाता था। उन्होंने यही बताया कि यह मूलमन्त्र है आपसी सद्व्यवहार का। इसमें आत्मभाव और विनम्र भाव समाया होता है जिस पर समूचे जीवन-व्यवहार की इमारत खड़ी होती है।

अभिवादन से सहज हो जाते हैं कार्य

अभिवादन करते हुए हम एक-दूसरे को ऐसी स्मृति दिलाते हैं जो जीवन-मूल्यों की श्रेष्ठता को दर्शाती है। गहरे में देखें तो अभिवादन करने का अन्तर्भाव ही यह होता है कि हमारा ध्यान परमात्मा के साकार चरित्रों वा महापुरुषों के श्रेष्ठ चरित्रों की ओर जाये। अभिवादन में हम ऐसे शब्द प्रयोग करते हैं जो दर्शाते हैं कि हमारे मनोजगत में एक-दूसरे के प्रति सम्मान-स्नेह है। अभिवादन के द्वारा सम्बन्ध और कार्य सहज हो जाते हैं।

परमात्मा पिता द्वारा नमस्ते की अनोखी विधि

नव-सृष्टि रचयिता स्वयं परमात्मा

भी अवतरित होकर हमें जीवन-व्यवहार की कला सिखाते हैं। आने वाले दो युगों (सतयुग और त्रेतायुग) में जो अभिवादन की श्रेष्ठ विधि होगी, उसका रोपण वे अभी ही कर रहे हैं। ऐसा गायन है कि परमपिता परमात्मा ने दृष्टि से सृष्टि रची। परमात्मा का दृष्टिकोण (दृष्टि) सर्वश्रेष्ठ है। जिस प्रकार व्यवहार और शिष्टाचार के दृष्टिकोण से पिता अपने बच्चों को स्नेहसूचक शब्दों से सम्बोधित करता है। खुद करता है और अपने बच्चों को वैसा सिखाता है। उससे भी पद्मगुणा आगे बढ़कर, परमपिता परमात्मा भी अवतरित होकर पहले बच्चों को नमस्ते कहते हैं। फिर बच्चे भी जवाब में कहते हैं कि बाबा (परमपिता), नमस्ते। इस ईश्वरीय अभिवादन में अलौकिक बात यह होती है कि वे पहले नज़र से भी निहाल करते हैं। दृष्टि से दृष्टि के मिलन में वे बहुत कुछ रच देते हैं। परमात्मा अपनी प्रेमपूर्ण भावनाओं को दृष्टि के द्वारा अनुभव कराते हैं।

सम्राट अशोक भारत के सर्वश्रेष्ठ सम्राटों में से एक रहे हैं। कलिंग युद्ध के बाद वे बौद्ध धर्म के अनुयायी बन गये। उनके जीवन में अध्यात्म का अंकुर फूटा। वे आम जनमानस के प्रति भी अत्यन्त द्रवीभूत हो गये। उन्होंने अपने राज्य में अपने मंत्रियों और द्वारपालकों को निर्देश जारी कर दिये थे, ''मैं जनता (प्रजा) का सेवक हूँ। यदि कोई भी व्यक्ति दरबार में अपने किसी कार्य हेतु आये, उसी वक्त मुझे तुरन्त सूचित किया जाये। उस समय मैं चाहे भोजन ग्रहण कर रहा हूँ, चाहे मंत्रियों से मंत्रणा में व्यस्त हूँ, चाहे अपने शयन-कक्ष में हूँ, चाहे बगीचे में प्रकृति के बीच प्रसन्नता की स्थिति में हूँ, मैं कहीं भी हूँ, किसी भी स्थिति में हूँ, मुझे तुरन्त सूचित किया जाये।'' उनके राज्यकाल में भारत का जितना विकास हुआ, उतना फिर कभी नहीं हुआ। नमन है उनके परोपकार भाव को।

कलिकाल में जीवन शैली ही बहुत मशीनी हो गई है। परस्पर अभिवादन भी एक मशीन की तरह ही हो गया है। अभिवादन में कोई भाव की तरलता अनुभव नहीं होती। अपनी तरफ से अभिवादन के कुछ शब्द बोलने की बात तो छोड़िए, कई बार तो अभिवादन के प्रत्युत्तर में एक हल्की-सी मुसकान की अभिव्यक्ति का भी टोटा (Scarcity) अनुभव होता है। एक हल्की-सी रूहानियत की आभा बिखेरने में जैसे कुछ खर्च होता हो।

आइये, हम दृढ़ संकल्प धारण करें कि एक-दो का अभिवादन दिल से करेंगे भी और स्वीकार भी दिल से करेंगे। अभिवादन जहाँ होगा वहाँ वाद-विवाद स्वत: समाप्त हो जाएगा।

श्रद्धांजलि

यज्ञस्नेही, त्याग-तपस्या की मूर्त, एकानामी की अवतार, साकार बापदादा की पालना प्राप्त ब्र.कु.शक्ति बहन का जन्म 15 अगस्त, 1937 को पंजाब प्रांत के एक उपनगर (अब पाकिस्तान में) के संपन्न तथा धार्मिक परिवार में हुआ। जब आप पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा तथा मातेश्वरी जगदंबा सरस्वती के सम्पर्क में आईं तो इनके त्याग-तपस्यामय जीवन से इतनी प्रभावित हुईं कि सन् 1962 में सरकारी अध्यापिका का पद त्यागकर आध्यात्मिक सेवा में समर्पित हो गई। आपने कोलकाता, बिहार, अलवर, जलपाईगुड़ी आदि अनेक स्थानों पर ईश्वरीय सेवाएँ की तथा अन्त के दिनों में झज्जर (हरियाणा) में सेवारत थीं।

आप सत्यनिष्ठ, कर्मठ तथा निर्भय थीं, बाबा ने आपको डबल शक्ति का वरदान दिया था और 80 वर्ष की आयु में भी अपने सर्व कार्य स्वयं ही उमंग से करती थीं। आपने अपना भौतिक शरीर सोमवार, 17 फरवरी, 2014 को प्रात: 4 बजे त्यागकर बापदादा की गोद ली। ऐसी स्नेही, आदि रतन, महान आत्मा को पूरा दैवी परिवार बहुत स्नेह से श्रद्धा सुमन अर्पित करता है। ❖

आवश्यक सूचना

(सदस्यता शुल्क से संबंधित)

1. नये वर्ष 2014-15 में 'ज्ञानामृत' तथा 'दी वर्ल्ड रिन्युअल' पत्रिकाओं का भारत में वार्षिक शुल्क 100 रुपये तथा विदेशों में वार्षिक शुल्क 1,000 रुपये रहेगा। आजीवन शुल्क भारत में 2,000 रुपये तथा विदेश में 10,000 रुपये रहेगा।
2. शुल्क राशि भेजते समय किसी के भी पर्सनल नाम पर नहीं भेजें, केवल 'ज्ञानामृत' या 'The World Renewal' के नाम पर ड्राफ्ट, मनीऑर्डर या डाकघर द्वारा EMO से भेजें। शान्तिवन डाकघर में ई.मनीऑर्डर (EMO) सुविधा उपलब्ध है जिस द्वारा उसी दिन 10 मिनट के अंदर भारत के किसी भी कोने से पत्रिकाओं की राशि शान्तिवन डाकघर में पहुँच जाती है जिसका पिन कोड नं. 307510 है। EMO के लिए मनीऑर्डर की तरह ही अपना पूरा पता तथा पिन कोड नं. अवश्य देना होता है। साथ में फोन नंबर तथा ई-मेल ID जरूर लिखें।
3. आपको ज्ञात होगा कि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (SBI) की ब्रांच **P.B.K.I.V.V.शान्तिवन** में है।
4. ड्राफ्ट के ऊपर केवल 'ज्ञानामृत, शान्तिवन' या 'The World Renewal, Shantivan' ही लिखें। किसी व्यक्ति या शहर का नाम न लिखें।
5. अभी आप ऑनलाइन भुगतान सुविधा द्वारा भी ज्ञानामृत के सदस्य बन सकते हैं। बैंक एकाउंट का विवरण निम्नलिखित है –

    बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इंडिया

    बैंक ब्रांच का नाम : शान्तिवन

    सेविंग बैंक एकाउंट नंबर : 30297656367

    सेविंग बैंक एकाउंट का नाम: World Renewal Gyanamrit

    IFS Code: SBIN0010638

    ऑनलाइन भुगतान करने के बाद नीचे लिखे ई-मेल पर अपना पूरा पता और बैंक भुगतान का पूरा विवरण भेजें। डिपोजिट केवल NEFT के द्वारा ही करें।
6. नये डायरेक्ट पोस्ट करने वाले पते टाइप करके या बड़े अक्षरों में साफ-साफ अंग्रेजी में ही लिखकर भेजें।

संपर्क के लिए

ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान।

फोन : 02974-228125, फैक्स : 02974-228116

मोबाइल : 09414006904, 09414423949

E-mail: omshantipress@gmail.com, hindigyanamrit@gmail.com

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन

E-mail : omshantipress@bkivv.org   Ph. No. : (02974) - 228125   gyanamritpatrika@bkivv.org